मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
जून-९२

श्रावण मास में

(१५-७-६२ से १३-८-६२ तक)

सर्व सिद्धि प्रदायक

भगवान सिद्धेश्वर प्रयोग

श्रावण मास भगवान शिव का सर्वाधिक अनुकूल मास है, शिव भक्त पूरे वर्ष भर श्रावण के महीने की प्रतीक्षा करते रहते हैं, फिर इस बार तो श्रावण मास का प्रारम्भ मकर राशि से हो रहा है, और मकर राशि में ही श्रावण मास का समापन हो रहा है, जो कि अपने आप में एक विशिष्ट योग है, एक ऐसा योग है जो कई वर्षों बाद आया है।

सम्पूर्ण श्रावण मास में 'बृहस्पति' सिंह राशि में रहेंगे, शिव जी का सर्वाधिक प्रिय प्रदोष व्रत है, सोमवार उन्हें अधिक प्रिय है ही, सोमवार और प्रदोष का संयोग बहुत महत्वपूर्ण है। परन्तु सोमवार+प्रदोष एवं श्रावण का संयोग दुर्लभ है, जब कि इस बार तो श्रावण माह के दोनों प्रदोष सोमवार को ही हैं। अतएव इस श्रावण मास को अद्वितीय कहा जाना चाहिए।

सर्व सिद्धि प्रदायक प्रयोग

सर्व सिद्धि प्रदायक प्रयोग का तात्पर्य उन समस्त कामनाओं की पूर्ति है, जो व्यक्ति की इच्छा होती है। साधक को चाहिए कि वह **'हर हर महादेव'** का घोष करते हुए, पूर्ण श्रद्धा के साथ इस प्रयोग को सम्पन्न करे। इस प्रयोग से निश्चित रूप से पुत्र प्राप्ति, पुत्र सुख और सौभाग्य वृद्धि तो होती ही है, रोगों के निवारण में भी यह प्रयोग अपने आप में अचूक है। भगवान शिव को वैद्यनाथ कहते हैं, और इस प्रयोग से सम्पन्न जल का पान यदि साधक एक महीने तक करे, तो निश्चय ही वह समस्त प्रकार के रोगों से मुक्त हो जाता है, भगवान शिव ने कामदेव पर विजय प्राप्त की थी और इसीलिए कमजोर और निर्बल मनुष्यों के लिए यह प्रयोग 'संजीवनी' की तरह है। जो इस प्रयोग को आजमा लेता है उसकी नपुंसकता, कमजोरी और शारीरिक क्षीणता दूर होती है और एक महीने के अन्दर-अन्दर वह पूर्ण पौरुषवान बन जाता है।

स्त्रियों के लिए तो यह "हर गौरी" प्रयोग है, जिसके माध्यम से वे इस प्रयोग को सम्पन्न कर सौभाग्य की कामना करती हैं, इस प्रयोग से पति को दीर्घायु प्राप्त होती है, और उसके जीवन के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। कुंवारी कन्याएं इस प्रयोग को करने से मनोवांछित वर प्राप्त करने में सफल हो पाती हैं। भगवान शिव को "रुद्र" कहते हैं जो कि शत्रुओं के पूर्ण संहारक हैं, इस प्रयोग को सम्पन्न करने से साधक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है, अपने विरोधियों पर हावी होता है और सभी दृष्टियों से सफलता प्राप्त करता है। वास्तव में ही यह प्रयोग पूरे वर्ष का सौभाग्य प्रयोग है, जिसे प्रत्येक पुरुष एवं स्त्री को सम्पन्न करना चाहिए।

वर्ष-१२

अंक-६

जून-१९९२

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज०)
टेलीफोन : ३२२०६

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो महाक्षीणकाय: सदाजाड्यवक्त्र: ।
विपत्तिप्रविष्ट: सदाहं भजामि, गुरुर्वै शरण्यं शरण्यं भजामि ।।

हे गुरुदेव ! मैं अनाथ, दरिद्र, जरा एवं विविध रोगों से ग्रसित हूं, क्षीण शरीर वाला, जड़ता युक्त एवं मूक हूं । विपत्तियों से घिरा हुआ मैं आपका सदैव ध्यान करता हूं तथा मात्र आपका ही शरण चाहता हूं ।

पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना

श्री गुरुदेव से है प्रार्थना, स्वर्गमय सभी का संसार हो।
"मैं-मेरी" जाती रहे, आत्म भावना, हृदय में उदय चितिज्ञान हो ।।
सभी जीवात्मा समता प्रेम से नित आपकी पूजा करें।
हरदम हमारी प्राणापान-गति गुरु मन्त्र जपा करे ।।

मुझ पर करो ऐसी कृपा, सर्वात्म भाव से आपकी पूजा करूं।
त्याग जाति-पन्थ-भाषाभेद, मन में निर्मलता धारण करूं ।।
छोटे-बड़े, दुखी-दीन, सज्जन-मूढ़ में गुरुनाथ! तेरे दर्शन हों।
सरल चित, निर्मानी अन्तर, विद्यादानी, उदार हृदय दो ।।

वरदान दो गुरुवर! सदा हृदय मन्दिर में तुम्हारा ध्यान रहे।
सर्वत्र जो है व्याप्त ज्योति, सर्वात्मा! उसमें स्नेह रहे ।।
बनी रहे, गुरु! तुझमें भक्ति, ज्ञान-योग-ध्यान में दृढ़ बुद्धि हो।
रहूं सदा मैं सिद्धविद्या का पुजारी, चित्त का चित शक्ति में प्रवेश हो ।।

श्रीराम, कृष्ण, शिव, शक्ति के तुम में सदा दर्शन करूं।
जहां तव सिद्धयोग विलसे, उस सिद्धाश्रम में वास करूं ।।
देश भाषा पन्थ जातिभेद से छुड़ा कर समता धर्म दो।
भर दो हृदय निखिलेश्वरानन्द स्फुरण से सच्चिदानन्द मति मेरी हो ।।

सरलता सत्य, वीरता, शौर्य, नीति, तेज सभी को प्राप्त हों।
जगत हो सब की आनन्दवाटिका, कल्पवृक्ष, कामधेनु से पूर्ण हो ।।
हों जितेन्द्रिय सिद्धविद्यार्थी, उनकी क्रियायोग में रति हो।
मानव मन्दिरों में, हे गुरुनाथ! तुम्हारे नित्य दर्शन पा आत्मतुष्टि हो ।।

जब तक घट में प्राण स्वकर्म निष्ठा दो, तेरा अखण्ड स्मरण करूं।
स्वकष्टमय भले जीवन हो, गुरुनाथ! आपका ही हरदम ध्यान करूं ।।
इतना तो अवश्य कर दो, गुरुदेव! मैं सदा आप में समाया रहूं।
पूरब-पश्चिम से उत्तर-दक्षिण तक, नित्य सर्वत्र आपका दर्शन करूं ।।

आप ही अलख निरंजन, परम शिव, सत् चित् आनन्द रूप हो।
आप में जगत, जगत में आप, ऐसे अभेद, अनुपम अनूप हो ।।
गुरुसेवक कहे, श्री गुरुनाथ! सिद्धविद्या पूर्ण फलने दो।
क्रियाशील हो ध्यान हमारा, नीलमणि में ही विश्रान्ति हो ।।

सुख पूर्ण सदा विचरूं जग में, हृदय में तेरा सदा ही निवास हो।
गुरुसेवक कहे, हे गुरुनाथ! हमारा जीवन संविद्‌विलास हो ।।

सद्गुरुदेव की महानता

पूज्य गुरुदेव के शिष्य आनन्द स्वामी ने उनके हिमालय प्रवास के दौरान उनका शिष्यत्व ग्रहण कर उनसे दीक्षा लेकर उनकी सेवा इत्यादि में ही अपना साधनात्मक जीवन प्रारम्भ किया। पूज्य गुरुदेव ने अनुग्रह स्वरूप उन्हें विशेष दीक्षाएं, विशेष अनुभूतियां, साक्षात्कार तथा परमतत्व की अनुभूति सम्पन्न कराई। उन्हीं आनन्द स्वामी ने पूज्य गुरुदेव की सेवा में प्रस्तुत आलेख भेजा है। श्री आनन्द स्वामी अभी भी हिमालय में ही निवास करते हैं।

—सम्पादक

श्री गुरुदेव के चरण कमलों को नमन करते हुए मैं पूज्य श्री की महानता के सम्बन्ध में हजारों पृष्ठ लिख सकता हू, मेरा उनसे सम्पर्क, दीक्षा, अनुभूतियां, उनका ज्ञान, उनकी महान कृपा इत्यादि सब कुछ तो अनोखा ही है। श्री गुरु ज्ञान से ही परमेश्वर से साक्षात्कार सम्भव है, श्री गुरु कृपा से जब तक हमारी अन्तरशक्ति जाग्रत नहीं होती, अन्तर का दिव्य ज्ञान नेत्र नहीं खुलता तब तक बाह्य कष्ट मिट नहीं सकता। स्वप्न में जिस प्रकार राजा भी अपने आपको भिखारी समझ सकता है, उसी प्रकार साधारण मनुष्य अज्ञान अवस्था में अपने आपको साधारण और दुखी अनुभव करता है।

अन्तर विकास के लिए, दिव्यत्व प्राप्ति के लिए, परम शिव पद पाने के लिए हमें मार्ग दर्शक की या पूर्ण सत्य के ज्ञाता सद्गुरु की अत्यन्त आवश्यकता है जैसे प्राण बिना जीवन सम्भव नहीं, उसी प्रकार गुरु बिन ज्ञान नहीं, शक्ति का विकास नहीं, अन्धकार का नाश नहीं, तीसरे नेत्र का उदय नहीं। गुरु की आवश्यकता तो मित्र से, पुत्र से, बन्धु से, पत्नी से भी अधिक है। गुरु की आवश्यकता धन-सम्पत्ति कल कारखानों कला और संगीत से भी

अधिक है, गुरु की आवश्यकता तो आरोग्य और प्राण से भी ज्यादा है । गुरुदेव ही तो शिष्य के अन्तर शक्ति का विकास करते हैं, पूज्य श्री की महिमा तो रहस्यमय और दिव्य है ।

संसार में गुरु बहुत होते हैं, हर कोई अपना नया पन्थ बनाता है, साधारण जनता ऐसे गुरुओं से थक गई है, जब कि ऐसा नहीं होना चाहिए ।

गुरु वह है जो शिष्य की अन्तर शक्ति जगा कर उसे आत्म आनन्द में रमण कराता है, जो शक्तिपात द्वारा अन्तर शक्ति की कुण्डलिनी जगाता है, योग की शिक्षा देता है, ज्ञान की मस्ती देता है, भक्ति का प्रेम देता है, कर्म में निष्कामता सिखा देता है, वह परम गुरु शिव स्वरूप है । वे ही सद्गुरुदेव शिव, राम, शक्ति, गणपति और माता-पिता हैं । गुरु के प्रसाद से नर नारायण स्वरूप बन कर आनन्दमग्न हो जाता है ।

(परम पूज्य गुरुदेव)

पूज्य गुरुदेव की महिमा तो महान है जिसे साधारण बुद्धि से समझा नहीं जा सकता है । गुरुदेव तो संसार के नियमों को तथा अदृष्ट के नियमों दोनों को भली भांति समझते हैं. अतः शिष्य को कभी भी गुरु के सामने सयाना बन कर परीक्षा लेने का प्रयत्न ही नहीं करना चाहिए । पूज्य गुरुदेव तो अपने भक्तों को घर बैठे ही विशेष अनुभूतियां करा देते हैं । कृपा मात्र से ज्ञान दृष्टि करा देते हैं, पूज्य श्री में ज्ञान योग, भक्ति योग और कर्म योग का पूर्ण समन्वय है, वे महाकुशल योगी होने पर भी सदा सादे और साधारण मानव जैसे रहते हैं । वे पूर्ण सर्वज्ञ होने पर भी अनजाने जैसी स्थिति में रहते हैं, उनके भीतर सिद्धियां सहज ही निवास करती हैं, सिद्धियां न जताने पर भी अपने आप क्रियाशील हो जाती हैं, उनके पास सिद्धियां नृत्य करती हैं. ऋद्धियों का निवास है. ऐसे सिद्ध योगियों के कारण ही तो पृथ्वी विद्यमान है ।

पूज्य गुरुदेव का गुरुत्व इतना पूर्ण है, कि उनका स्मरण करने से, यश गान करने से, आरती करने से और उनके चित्र की ओर देखने से ही शक्तिपात हो जाता है । जब तक सूर्य चन्द्र हैं, पूज्य गुरुदेव का दर्शन सनातन नित्य बना ही रहेगा ।

साधारण मनुष्य को तो जो भी व्यक्ति चमत्कार दिखाता है, वह उसे ही गुरु मान लेता है, और इस तरह अनेकानेक गुरु बना लेता है, उसके अन्तर की क्षुधा शान्त नहीं होती, और जब श्रद्धा भंग हो जाती है तो

गुरुत्व को ही पाखण्ड समझने लगता है, ऐसा करने से वह सच्चे गुरु से दूर रह जाता है और उसकी अवहेलना करता है। पूज्य श्री में जो गुरुत्व विद्यमान है वह सहज-स्वरूप है।

पूज्य गुरुदेव तो पूर्ण हैं, शिष्यों के हित चिन्तक हैं शिष्यों की चिन्ताएं गुरुदेव की चिन्ता है, वे कठिन तपस्या बिना ही शिष्य को आत्म साक्षात्कार करा देते हैं, घर में ही हिमालय की शान्ति और एकान्तता अनुभव करा देते हैं। श्रीगुरुदेव शिष्य को इस ससार में गृहस्थ में रहते हुए भी उसके साधारण से जीवन को भी दिव्य जीवन बना देते हैं, ऐसे गुरु के बिना शिष्य भले ही कितनी ही दीक्षाएं ले ले, पहाड़ जगल इत्यादि मे भटक जाय और जब वह निरुत्साह हो जाता है तब अपने भाग्य और कम के नाम से रोता चिल्लाता है। इस प्रकार वह चिन्ता ही चिन्ता में समाप्त हो जाता है।

जब गुरुदेव साक्षात्कार कराते हैं तभी शिष्य को गुरु की महानता का ज्ञान होता है, पूज्य गुरुदेव तो अपने शिष्यों को एक ऊंचे स्तर पर ले जाकर सत्य स्वरूप बता कर शिवत्व का अनुभव कराते हैं। उसके जीवन को पूर्ण रूप से बदल देते हैं, पीड़ा तथा दुःख से भरे जीवन को नया जीवन प्रदान करते हैं, उसे संसार में ही पूर्णत्व की प्राप्ति करा देते हैं। जिस प्रकार उल्लू दिन में नहीं देख सकता और कौआ रात्रि में नहीं देख सकता जबकि नेत्र उनके विद्यमान रहते हैं, वैसे ही साधारण मानव पूज्य गुरुदेव का गुरु प्रसाद पाये बिना संसार को स्वर्गमय नहीं देख सकता, केवल दुःखमय और शोकमय ही देख सकता है।

पूज्य गुरुदेव मन्त्र चैतन्यकारक, मन्त्र द्रष्टा, शक्तिपात कुशल हैं, उनमें शक्ति संचार की विशेष सामर्थ्य है और सबसे महत्वपूर्ण बात तो पूज्य श्री में **'पारमेश्वरी अनुग्राहिका शक्ति'** का पूर्ण रूप से निवास है, पूज्य गुरुदेव अपने कृपा प्रसाद से योगमाया महाकुण्डलिनी का जागरण कर अन्तर के सारे दोष समाप्त कर कुण्डलिनी चिति शक्ति को पूरे शरीर में संचारित कर देते हैं, इसीलिए शरीर मांसमय दिखने पर भी पूर्ण चितिमय होकर ही रहता है और इसी शक्ति विलास की आनन्द मस्ती में पूज्य गुरुदेव नित्य प्रेमानन्द में डूबे रहते हैं।

अब प्रश्न है कि शिष्य गुरु में क्या देखें ? जो गुरु अपने शक्ति रूप में शिष्य में प्रविष्ट हो जाते हैं, उसके पापों को, दोषों को समाप्त कर देते हैं, ऐसे पूज्य गुरुदेव के प्रतिदिन का अनुग्रह, उपकार, दया हो, उनके प्रति कैसा व्यवहार हो, जो अन्तर के मल को जला कर योगाग्नि में देह को शुद्ध कंचन बना देते हैं, ऐसे गुरु के समान मित्र, प्रेमी, माता-पिता, देवता कौन हो सकता है, क्या इनकी महिमा शब्दों में गाई जा सकती है।

मुझ आनन्द स्वामी के तो सब कुछ परम पिता देवता ध्यान धारणा समाधि आप ही एक मात्र **निखिलेश्वरानन्द** हो, प्यारे आनन्द हो, क्या मैं केवल आपकी आरती गा कर आपके उपकार को चुका सकता हूं ? नहीं प्रभु गुरुदेव आप महान हैं, आपकी पूजा ही मेरे लिए सब कुछ है, मेरे भीतर बहने वाला प्राण आप हैं, आपका दीक्षा मन्त्र मेरे लिए सब कुछ है, ध्यान मन्त्र है, यही पूर्णाहुति है।

मेरे लिए आपके दिये शब्द ही चैतन्य मन्त्र हैं, आप चितिमय परमगुरु मन्त्र द्वारा, स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा शिष्य में प्रवेश करते हैं, इसीलिए तो मेरे लिए गुरु सहवास, गुरु सम्बन्ध, गुरु आश्रम वास, गुरु चरण स्पर्श, गुरु

तीर्थपान, गुरु प्रसाद, गुरु सेवा, गुरु गुणगान, गुरु प्रेमोन्मत्त स्थिति में श्रीमुख से बहने वाले चिति स्पन्दनों का सेवन, आप द्वारा पहने ओढ़े वस्त्रों का स्पर्श और आपके शरीर से निकलती हुई आभामयी किरणें मुझे पूर्ण सिद्धि प्राप्त करा देने में पूर्णतः समर्थ हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं, आपकी महिमा तो महान ही महान है।

दीक्षा काल में गुरु शक्ति ही शिष्य में प्रवेश करती है, यह बीज के रूप में शिष्य में प्रविष्ट होकर उसको नाना प्रकार की योग क्रियाओं को सम्पन्न कराती है, जब शिष्य पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए, तन्मयता के भाव में ध्यान के लिए आसन पर बैठ कर शान्त भाव से गुरु मन्त्र का पुरश्चरण करता है तब मन्त्र रूप में गुरुदेव ही अन्तर क्रियाशील हो जाते हैं। उस समय शिष्य नाना प्रकार के आसन, हुंकार, नृत्य, मन्त्र घोष तथा मुद्राए आदि करता है, बाहर से कोई सामान्य व्यक्ति देखे तो उसे यह सब अति विचित्र और भययुक्त लगता है, परन्तु सच्चा शिष्य नहीं डरता, इन क्रियाओं से एक प्रकार की मस्ती और आनन्द की अनुभूति करता है। ये सभी क्रियाएं कुछ राज योग की, कुछ हठ योग की, कुछ मन्त्र योग की और कुछ भक्ति योग की हैं।

दिन प्रति दिन शिष्य जितनी गुरु भक्ति को बढ़ाता जाता है उसी अनुपात में गुरु को अपने भीतर प्रवेश कराता जाता है, जितना गुरु में तन्मय होकर मिलता है, उतनी ही उच्च से उच्च क्रियाएं, अद्‌भुत चमत्कार जैसे आसन, दूरदर्शन, दूरश्रवण सहज ही प्राप्त हो जाते हैं।

जो शिष्य कभी अपने हृदय की मलीनता के कारण पूज्य गुरुदेव के व्यवहार राग-द्वेष और अन्य रोगों को देखने लगते हैं तो यह याद रहे कि उनके भीतर की शक्ति प्रक्रिया उतनी ही मन्द हो जाती है। शिष्य को गुरु के आचरण की, गुण दोष की, व्याख्या करने का कोई अधिकार नहीं है।

पूज्य गुरुदेव का आचरण कभी-कभी मेरे प्रति बड़ा ही विचित्र हो जाता था, कई बार मैंने उनके हाथों मार खाई, उनके चरणों का प्रसाद मिला, लेकिन इसमें भी कुछ कारण था, पूज्य गुरुदेव का आचरण सिद्ध महा-योगी जैसा आचरण रहता है, वे साधारण जीवन में भी अतिसाधारण रहते हैं, ऐसे महान गुरुदेव से हर कोई मांगता है और हर एक को कुछ न कुछ प्रदान करते रहते हैं।

मेरे प्रिय मित्रों, यह याद रखो कि प्रकृति में चाहे परिवर्तन हो जाय एक बार गुरु कृपा हुई तो वह व्यर्थ नहीं जाती, यह कृपा शिष्य के साथ जन्म जन्मान्तर रहती है, जो मन्त्र तुम्हें गुरु श्रीमुख से मिला है उसे पूर्ण श्रद्धा से परम सत्य निष्ठा से जप करो। मन्त्र, गुरु शक्ति और तुम एक हो, इस बात को कभी मत भूलो। मन्त्र में पूज्य गुरुदेव मूर्तिमान होकर आवास करते हैं, इसीलिए गुरु मन्त्र को प्रेम से गाओ, स्नेह से ध्याओ, शक्ति तो विद्युत वेग से तुम्हारे लिए कार्य करेगी ही करेगी।

मेरे मित्रों ! मुझे गर्व करना गुरुदेव ने ही सिखाया, स्वाभिमान, साधना की शक्ति उन्होंने ही प्रदान की, मैं पूज्य गुरुदेव से उतना ही निकट हूं जितना गुरु आश्रम में बैठे शिष्य अथवा कहीं और स्थान में गुरु मन्त्र का जप करता हुआ उनका शिष्य। आओ हम सब मिल कर प्रार्थना करें, हमारे इस जीवन को धन्य बना देने वाले पूज्य गुरुदेव को शत् शत् नमन करें। ●

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

(१२, १३, १४ जुलाई १९९२)

विश्व में सबसे अधिक पवित्र सम्बन्ध गुरु और शिष्य का सम्बन्ध है, शिष्य अपनी जीवन की तृष्णाओं, इच्छाओं की पूर्ति, सही मार्ग और जीवन के उद्देश्य को समझने और उसे आत्मसात करने के लिए भटकते-भटकते गुरु के पास पहुचता है। शिष्य बारह साल का भी हो सकता है, और साठ साल का भी, यह खोज तो एक लम्बी यात्रा है, जीवन रूपी रेगिस्तान में यदि किसी को घना वृक्ष, मधुर अमृत समान जल मिल जाय, तो जो प्रसन्नता होती है, वही प्रसन्नता शिष्य को गुरु के पास आकर होती है। प्रारम्भ में गुरु शिष्य की परीक्षा लेने के लिए उससे कहते हैं कि तुम अपने कार्य में ही ठीक हो, जिस प्रकार से जीवन जी रहे हो, उसी प्रकार जीये जाओ, मेरे साथ चलने का मार्ग बड़ा कठिन है।

इस यात्रा में कच्ची चाह वाले, डगमगाती आस्था वाले, शुद्ध ज्ञान मार्ग को न समझने वाले शिष्य तो आधे रास्ते ही भाग खड़े होते हैं, और गुरुदेव उनकी ओर पीछे मुड़ कर भी नहीं देखते, उन्हें ज्ञात है कि जो संकल्प का खरा है, जिसने अपने प्रण को निभाने का निश्चय कर लिया है, जो जीवन की पीड़ाओं से मुक्ति पाना चाहता है, वह उनके पद चिन्हों पर अवश्य चलेगा, उसे न तो घर परिवार रोक सकता है और न ही कोई अन्य शक्ति।

गुरु पुकारे और शिष्य दौड़ा हुआ चला न आवे, ऐसा हो ही नहीं सकता, क्योंकि शिष्य दीक्षा लेते ही अपने जीवन की बागडोर गुरु के हाथों सौंप देता है, और उसके मन में यही भावना रहती है कि, "यह सब कुछ तेरा ही दिया है और तुझे ही समर्पित है", मैं तो तुम्हारे आदेश से इसे चला रहा हूं।

गुरु शिष्य सम्बन्ध

गुरु शिष्य सम्बन्ध की व्याख्या में हजारों ग्रन्थ लिखे गये हैं जबकि वास्तविक स्वरूप में यह सम्बन्ध सबसे अधिक सरल सम्बन्ध है, रक्त और रक्त में भेद हो सकता है, लेकिन गुरु और शिष्य में भेद नहीं हो सकता। जिस प्रकार नदी को दौड़ते भागते समुद्र में मिलना ही है, उसी प्रकार शिष्य को गुरु में एकाकार होना ही है।

गुरु मूलं जगत् सर्वं गुरु मूलं परं तपः।
गुरोः प्रयास मात्रेण मोक्षमाप्नोति सद्वशी ।।

"गुरु ही शिष्य के लिए मूल स्वरूप है, अर्थात् शिव है, उसके लिए सम्पूर्ण जगत है, और गुरु की प्रशंसा से ही जीवन में पूर्णता है।"

जब शिष्य दो बातें पूरी तरह से समझ लेता है, तो फिर उसे कुछ और समझने की आवश्यकता ही नहीं है, जो इनमें हैं—

गुरुः कर्ता गुरुर्हता गुरूर्माता महीतले।
गुरु सन्तोष मात्रेण तुष्टाः स्युः सर्व देवता ।।
गुरौ तुष्टे शिवस्तुष्टो रुष्टे रुष्टस्त्रिलोचनः।
गुरौ रुष्टे शिवो रुष्टः रुष्टे तुष्टे च सुन्दरि ।।

जब शिष्य गुरु को ही कर्ता और हर्ता मान लेता है, तो उसके लिए सभी देवता अपने आप सिद्ध हो जाते हैं। शिष्य की भी अपनी कुछ विशेष चाह होती है और जब-जब वह गुरु के समीप होता है, तो उसकी प्यास को तृप्ति मिलती है, वह नित्य प्रति परमात्मा को धन्यवाद तो अवश्य देता है कि मेरा यह जीवन सार्थक हो गया, जब मुझे मेरे गुरु मिल गये, मैं अनुग्रहीत हूं, बन्धनों से स्वतन्त्र हूं, गुरु की महिमा में भक्त सुन्दरदास लिखते हैं—

गुरदेव सर्वोपरि, अधिक विराजमान।
गुरुदेव सबहिं ते अधिक गरिष्ठ हैं ।।
गुरुदेव दत्तात्रेय, नारद शुकादि मुनि।
गुरुदेव ज्ञानधन, प्रगट वशिष्ठ हैं ।।
गुरुदेव परम आनन्दमय देखियत।
गुरुदेव वर वरि-यान हूं वरिष्ठ हैं ।।
सुन्दर कहत कछु महिमा कही न जाये।
ऐसे गुरुदेव दादू, मेरे सिर इष्ट हैं ।।

समर्पण दिवस—गुरु पूर्णिमा

समय के अनुसार बहुत कुछ बदला, प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह सम्भव नहीं है कि अपने घर परिवार को पूर्णतः त्याग कर जंगलों, वनों और हिमालय की ओर प्रस्थान कर जाय, उसके लिए तो जीवन घट चक्र के सारे नियमों का पालन करना है, और इस पालन में अपने लक्ष्य का ध्यान रखते हुए पूर्णतः प्राप्त करनी है। गुरु भी शिष्य को जब दीक्षा देते हैं तो उसे केवल एक मन्त्र देते हैं, इस मन्त्र में सारे रहस्य छिपे रहते हैं और उसे परम तत्व की पहिचान का एक मार्ग दे देते हैं।

जब शिष्य यह बात जान लेता है, कि मुझे कितना बड़ा उपहार प्राप्त हुआ है, जो भी सिद्धि है, वह गुरु कृपा से है, और मुझे इसका धन्यवाद देना ही है—

गुरु सन्तोष मात्रेण सिद्धिर्भवति शाश्वती ।
अन्यथा नैव सिद्धिः स्यादभिचाराय कल्पते ॥

अर्थात् श्री गुरुदेव के सन्तोष से ही शाश्वत सिद्धि प्राप्त की जाती है, और याद रखें कि अब तक के जीवन में जो कुछ भी प्राप्त हुआ है, वह गुरु कृपा का ही फल है, उनके ही द्वारा दिया गया प्रसाद है।

शिष्य के लिए गुरु पूर्णिमा से बढ़ कर कोई महान उत्सव नहीं है अन्य उत्सवों में तो वह अपने सांसारिक क्रिया कलाप की प्रक्रिया में श्रेष्ठता लाने के लिए कार्य करता है, गुरु के आदेश से साधनाएं करता है, और गुरु पूर्णिमा गुरु कृपा प्रसाद का जो फल मिला है, उसे समर्पण करने का अवसर है—

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

अर्थात् "हे श्रीकृष्ण ! मेरे द्वारा आराध्य !! तेरा दिया हुआ सब कुछ तुझे ही समर्पित है, मैं तो एक निमित्त मात्र हूं।" और इसी प्रकार शिष्य भी गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरुदेव को समर्पण करते हुए कहता है कि, "हे प्रभु ! यह संसार मैंने आप ही की कृपा से एक नवीन दृष्टि से देखा है, इसमें आनन्द की लहरें आपकी ही कृपा से हैं। मेरे पापों दोषों का निवारण आपकी ही एक दृष्टि से सम्भव हुआ है। अतः यह सब माया आपकी ही है, मैं इसे शब्दों में किस प्रकार प्रकट करूं, इस महान समर्पण दिवस पर आपके सम्मुख बैठ कर आपको अपने नेत्रों के माध्यम से अपने हृदय में उतार लेना चाहता हूं, यही मेरी इच्छा है।"

प्राणोत्सव गुरु पूर्णिमा

इच्छाओं कामनाओं के उत्सव तो वर्ष भर में अनेक आते हैं, लेकिन प्राणों का उत्सव, गुरु से एकाकार होने का उत्सव वर्ष में केवल एक ही है और वह है गुरु पूर्णिमा। यह उत्सव केवल गुरु और शिष्य का उत्सव है, जहां शिष्य अपने आपको समर्पित कर देता है, नया शक्ति संकल्प लेता है, गुरु शक्ति चक्र से शक्ति किरणें प्राप्त करता है। **रुद्रयामल तंत्र** में लिखा है कि वे शिष्य भाग्यशाली हैं,

जिन्हें सदेह गुरु प्राप्त होते हैं, उनकी वाणी सुनने को मिलती है, इन सांसारिक नेत्रों से वे प्रत्यक्ष गुरु दर्शन कर सकते हैं।

शिष्य पूरे वर्ष गुरु के पास न जाय तो भी कोई अन्तर नहीं पड़ता, लेकिन गुरु पूर्णिमा के अवसर पर उसे गुरु के सम्मुख बैठ कर साक्षात् गुरु पूजन अवश्य ही करना चाहिए।

गुरु पूर्णिमा बम्बई में

पूज्य गुरुदेव की माया निराली है, वे शिष्यों के हृदय को उनकी भावनाओं को सूक्ष्म रूप से जानते हैं, अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करते हुए भी उन्होंने इस बार गुरु पूर्णिमा आयोजन की स्वीकृति दे दी है, अपने कष्ट की चिन्ता किये बगैर शिष्यों की भावनाओं, इच्छाओं को विशेष महत्व देते हुए कह दिया कि मेरे सभी शिष्यों इस बार तुम गुरु पूर्णिमा पर बम्बई में आ जाओ। **पूज्य गुरुदेव** ने अभी कुछ ही दिन पहले शिष्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब तक मेरे एक-एक शिष्य के चेहरे पर मुस्कान नहीं होगी तब तक मुझे शान्ति नहीं होगी। मैं हर शिष्य का इस गुरु पूर्णिमा पर स्वागत कर अपनी बांहों में समेट लूंगा, उसके रुदन को उसकी पीड़ा को अपने भीतर उतार लूंगा।

जब पूज्य गुरुदेव ने इतनी महान बात कह दी है तो हम शिष्यों के क्या कर्त्तव्य हैं, इसे आप सभी भली-भांति जानते हैं, बस मैं **गुरु सेवक** केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि—

श्री गुरूं शरणं गच्छामि।

श्री ध्यान योग शरणं गच्छामि।

श्री गुरुभक्तिप्रेम प्राप्नोमि।

परस्पर देवो भव इति धारणां धारयामि।

सततं श्रीगुरूं स्मरामि।

मम मति "श्रीगुरु" मम गतिः

श्रीगुरुः मम रतिः

श्रीगुरुः ममात्मा इति

सत्यं सत्यं वदामि॥

गुरु पूर्णिमा

समर्पण सिद्धि दिवस

जब शिष्य गुरु कृपा पाकर निहाल हो जाता है

(१२, १३, १४ जुलाई १९९२)

इस बार गुरु पूर्णिमा आयोजन को लेकर कुछ अनिश्चय की स्थिति बनी हुई थी, पूज्य गुरुदेव की सेवा में स्थान-स्थान से निमन्त्रण था, हर कोई चाहता था कि उसके नगर में ही गुरु पूर्णिमा जैसा महान उत्सव, आयोजन सम्पन्न हो, रायबरेली के शिष्यों के एक समूह ने गुरुदेव से निवेदन भी किया था, उसी प्रकार सूरत तथा जबलपुर में भी शिष्य बड़े उतावले और आतुर थे, उज्जैन में पूर्णेश चौबे इत्यादि ने तैयारी भी प्रारम्भ कर दी थी, उनका कहना था कि उज्जैन कुम्भ शिविर आयोजन का आनन्द उन्हें नहीं मिल पाया है, तो गुरु पूर्णिमा के आयोजन की गुरु कृपा तो उन्हें प्राप्त होनी ही चाहिए।

वर्तमान में पूज्य गुरुदेव का बम्बई प्रवास है और वहां शिष्यों ने तो हठ ही पकड़ लिया, पूज्य गुरुदेव से मिलने पूरे भारत से जो शिष्य आये उनका भी यही निवेदन था कि, हे प्रभु! आप बम्बई में ही प्रवास करें, जहां आप विराजमान हैं, हमारे लिए वहीं गुरुधाम है, अभी आप यात्रा इत्यादि का कष्ट न उठाएं और गुरु पूर्णिमा का आयोजन बम्बई में ही हम सब शिष्यों को आयोजित करने का सौभाग्य प्रदान करें।

प्रभु की माया प्रभु जानें

सद्गुरुदेव की तो माया ही निराली है, कब कहां पहुंच जाते हैं, किस शिष्य पर कृपा का भण्डार लुटा देते

हैं इसे समझ पाना हम सब शिष्यों के तो वश की बात नहीं है, कुछ दिन तक तो उन्होंने अपने निर्णय की स्वीकृति से अवगत ही नहीं कराया, सब लोग बड़ी ही अनिश्चय की स्थिति में थे, और आज उन्होंने कह दिया कि, **"जैसी तुम सब लोगों की इच्छा, यदि तुम लोगों की इच्छा बम्बई में ही यह आयोजन करने की है तो करो।"** पूज्य गुरुदेव ने कहा कि तुम लोग रोज कहते हो कि— **"अब सौंप दिया सब भार तुम्हारे हाथों में"** तो आज मैं तुम्हें सौंपता हूं सब कुछ !

बम्बई सभी साधकों के लिए अनुकूल है, सीधी बस, ट्रेन तथा वायुयान की सुविधा है, सभी शिष्यों के लिए समय पर पहुंचना उत्तम रहेगा। बम्बई के साधकों को पूज्य प्रभु के इस निर्णय से अत्यधिक प्रसन्नता हुई है और प्रत्येक शिष्य ने अपनी पूरी शक्ति सामर्थ्य से कार्य करने की सौगन्ध ली है, उन सबका कहना है कि हमारी कई वर्षों की इच्छा अब पूर्ण होगी। पूरे भारतवर्ष से आये गुरु भाइयों का स्वागत कर हमें प्रसन्नता होगी, भला ऐसा अवसर जीवन में कब-कब आता है ?

शिष्यों से निवेदन

बम्बई जाने वाली सभी ट्रेनों में भीड़ अत्यधिक रहती है, अतः यह उचित रहेगा कि समय पर रिजर्वेशन करा लें, जिससे यात्रा में असुविधा और कष्ट न हो तथा तीन दिनों के इस उत्सव का पूरा आनन्द ले सकें।

गुरु पूर्णिमा आयोजन हेतु बम्बई में कार्यालय की स्थापना कर दी गई है, साधकगण विशेष जानकारी हेतु नीचे लिखे पते पर पत्र अथवा फोन द्वारा जो भी सूचना चाहें, प्राप्त कर सकते हैं।

गुरु पूर्णिमा आयोजन में शिविर शुल्क ६६०) रु० मात्र है जो कि वहां आने पर **श्री योगेन्द्र निर्मोही** के पास जमा कराना है, आपके ठहरने, भोजन तथा साधनात्मक सामग्री की व्यवस्था इसी शुल्क से की जायेगी, आपको तो बस गुरु चरणों में उपस्थित होना है।

सिद्धाश्रम साधक परिवार की कुछ शाखाओं ने फोन द्वारा सूचित किया है, कि वे समूह रूप में बस लेकर आएगे, ताकि उनके क्षेत्र के सभी लोग एक साथ संयुक्त रूप से पहुंच सकें, यह तो अत्यन्त ही श्रेष्ठ विचार है, बम्बई जैसे शहर में व्यवस्था कार्य निश्चय ही थोड़ा कठिन रहता है, आशा तो है कि सभी शिष्य इस अवसर की महानता को समझते हुए बम्बई अवश्य पहुंचेंगे, फिर भी वे सभी शिष्य पत्र लिख कर सूचना अवश्य देदें। जो शिष्य अपने पूरे परिवार के साथ पहुंच रहे हैं वे भी सूचना दें, जिससे उसी अनुसार आयोजन, व्यवस्था की जा सके।

सभी साधकों को "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" तथा "सिद्धाश्रम साधक परिवार केन्द्रीय समिति जोधपुर" द्वारा पत्र अलग से भेजा जा रहा है, जिसमें स्थान तथा पूरे कार्यक्रम का विवरण है, जिन्हें वह पत्र प्राप्त न हो, वे इस सूचना को ही निमन्त्रण समझें तथा पत्र या फोन करके स्थान आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर लें। ●

श्री योगेन्द्र निर्मोही
द्वारा—श्री किशोर भानूशाली
७७५/२८ सागर संगम बिल्डिंग
कृष्णचन्द्र रोड,
बान्द्रा रेकलेमशन बस डीपो के पास
(बान्द्रा वेस्ट)
बम्बई—फोन नम्बर : ६४४३०५६

卐

श्री वांछा कल्प लता साधना

साधनाओं के अथाह सागर में साधक को संकल्प अर्थात् विचार और क्रिया (विधि), दोनों पक्षों पर समान रूप से ध्यान देते हुए साधना सम्पन्न करनी चाहिए, श्री वांछा कल्पलता साधना अद्भुत वेदोक्त, तांत्रोक्त साधना है, इस सम्बन्ध में पूर्ण विवरण प्रथम बार—

आज जब मैं "श्री वांछा कल्प लता" के सम्बन्ध में लिख रहा हू तो मुझे एक अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है, मन्त्रों के गहन अध्ययन के पश्चात् मेरा यह निष्कर्ष है कि 'श्री वांछा कल्प लता' के समान सुन्दर कोई मन्त्र नहीं है, इस उपहार को जब मेरा प्रत्येक साधक, शिष्य सम्पन्न करेगा और उसके फल को भोगेगा, तभी मुझे पूर्ण प्रसन्नता होगी और मेरा उपहार सफल होगा।

'श्री वांछा कल्पलता' शब्द ही अपने आपमें अद्भुत है, इसकी सन्धि विच्छेद करने पर दो अलग-अलग शब्द बनते हैं, प्रथम है–'वांछा' जिसका तात्पर्य है इच्छा, कामना, अभिलाषा, और 'कल्पलता' का तात्पर्य है–कल्प वृक्ष, जो साधक को उसकी कामना के अनुरूप तत्काल फल प्रदान करता है अतः 'वांछा कल्प लता मन्त्र' का तात्पर्य है, जो मन्त्र साधक को उसकी इच्छानुसार, कामनानुसार फल प्रदान करे।

वेदों में वांछा कल्प लता

अथर्ववेद के सौभाग्य काण्ड में 'श्री वांछा कल्प लता' प्रयोग का विस्तार मे वर्णन प्राप्त होता है, लेकिन इसके साथ ही ऋग्वेद में भी कुछ मन्त्र लिखे हुए हैं, ऋग्वेद में इसके द्रष्टा वैवस्वत मनु कहे गये हैं, इसके अतिरिक्त विभिन्न ग्रन्थों में इसके प्रयोग की जानकारी मिलती है, और इसके सम्बन्ध में अलग-अलग मन्त्रों की रचना आनन्द भैरव, अंगिरा ऋषि, कश्यप ऋषि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गणक ऋषि द्वारा की गई है, इससे ही यह स्पष्ट हो जाता है, कि इन सभी महान ऋषियों ने इस प्रयोग को स्वयं सिद्ध किया, इसमें सिद्धि प्राप्त की

और अपने प्रयोग विधान को भविष्य की पीढ़ियों के लिए छोड़ गये।

प्रयोग पारिजात नाम ग्रन्थ में इस सम्बन्ध में एक विशेष बात लिखी है जो कि अब तक किसी भी मन्त्र के सम्बन्ध में नहीं लिखी गई है—

वांछा कल्पलतायास्तु न होमो न च तर्पणम।
स्मरणादेव सिद्धिः स्यात् यदिच्छति हि तद्भवेत् ।।
एकवृत्या वशे लक्ष्मीः पंचावृत्या वशं जगत्।
दशावृत्या तथा विष्णु-रुद्र-शक्तिर्भवेदिह ।।
सार्वभौमः शतावृत्या भवत्येव न संशयः।

अर्थात्, "श्री वांछा कल्प लता मन्त्र के प्रयोग में होम तर्पण करने की आवश्यकता नहीं होती, इसके साधक की जो भी इच्छा होती है, वह इस मन्त्र का स्मरण करने मात्र से ही पूरी हो जाती है। इस मन्त्र की एक आवृत्ति से लक्ष्मी मिलती है और पांच आवृत्तियों से संसार वशीभूत होता है, दस आवृत्तियों से विष्णु और रुद्र की शक्ति प्राप्त होती है, एक सौ आवृत्ति करने से साधक सारे विश्व में माननीय होता है, इसमें संदेह नहीं।"

इसका विधान अत्यन्त सरल है, अलग-अलग ग्रन्थों में थोड़ा बहुत भेद अवश्य प्राप्त होता है। पत्रिका पाठकों हेतु जो विशेष विधान स्पष्ट कर रहा हूं, इसे मैंने स्वयं बार-बार सम्पन्न किया है और प्रत्येक बार पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

'श्री वांछा कल्प लता प्रयोग' मूल रूप से **महा त्रिपुर सुन्दरी** की साधना है, जो कि आदि शक्ति है, इसके साथ ही **महागणपति** और **रुद्र** की भी साधना सम्पन्न की जाती है। इस विशिष्ट मन्त्र में **क्षिप्र भैरव, क्षिप्र भैरवी, आनन्द भैरव,** तथा **आनन्द भैरवी** का ध्यान किया जाता है, इतनी महान साधना एक साथ किसी एक विधान को सम्पन्न करने से प्राप्त होना असंभव है।

साधना सामग्री

इस साधना हेतु सामान्य पूजन सामग्री अबीर-गुलाल, मौली, कुंकुम, चन्दन, सिन्दूर, पुष्प, प्रसाद, फल, नैवेद्य के अतिरिक्त—**१-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी चित्र, २-महागणपति यन्त्र, ३-श्री वांछा कल्प लता महायन्त्र, ४-क्षिप्र भैरव चक्र, ५-क्षिप्र भैरवी चक्र, ६-आनन्द भैरव चक्र, ७-आनन्द भैरवी चक्र,** तथा **८-चार अमृत रुद्राक्ष** आवश्यक हैं।

इस सम्पूर्ण अनुष्ठान में मन्त्र जप में केवल **स्फटिक मुक्ता माला** का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

एतज्जपस्य कालस्तु रात्रौ यामत्रयावधि।
रात्रेश्चतुर्थ-प्रहरान् तथा सूर्योदयावधि ।।

एक विशेष बात का ध्यान रखें कि वांछा कल्प लता साधना दिन में सम्पन्न नहीं की जाती है, **इसे केवल रात्रि के अन्तिम प्रहर से प्रारम्भ कर सूर्योदय तक ही सम्पन्न करना है।**

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा कि यह प्रयोग काल रात्रि अर्थात् अमावस्या से प्रारम्भ कर इस पूरे अनुष्ठान को अमावस्या तक अवश्य सम्पन्न करें। एक महीने तक प्रति दिन जो मन्त्र संख्या निश्चित करें, वह पूर्ण रूप से निभाते हुए मन्त्र-जप अवश्य करें।

अमावस्या की रात्रि के चौथे प्रहर उठ कर स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान को पुष्पों, पत्तों और मालाओं से सजा दें, अगरबत्ती, इत्र इत्यादि से पवित्र सुगन्धित वातावरण हो।

अब अपने सामने एक बाजोट पर सभी सामग्रियों का एक-एक कर पूजन करें, सर्वप्रथम **गणपति** का पूजन कर **महागणपति यन्त्र** स्थापित करें, तत्पश्चत **क्षिप्र भैरव चक्र** तथा **क्षिप्र भैरवी चक्र** का पूजन कर अपने बांई ओर स्थापित कर सिन्दूर चढ़ाएं, दाहिनी ओर **आनन्द भैरव चक्र** तथा **आनन्द भैरवी चक्र** स्थापित

करें, सामने एक ताम्र पात्र में पुष्प का आसन दे कर वांछा कल्प लता महायन्त्र स्थापित करें, शिव मन्त्र का जप करते हुए चारों दिशाओं में सामने बाजोट पर ही चार अमृत रुद्राक्ष स्थापित करें, पूजन में प्रयुक्त होने वाली सभी सामग्रियों को प्रयोग में लाएं।

अब विनियोग तथा करन्यास, अंगन्यास, ध्यान और पंचोपचार मानस पूजन सम्पन्न करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री वांछाकल्पलता मन्त्रस्य श्रीआनन्द भैरवागस्त्यांगिरस कश्यप वशिष्ठ विश्वामित्र संवाद ऋषयः, देवी गायत्री नृचृद् गायत्री त्रिपदा गायत्र्यनुष्टुप् नानाविधानि छन्दांसि, श्रीमहागण-पति-ललिता-सम्वादाः यमृत-रुद्रो देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्रीपरा-विद्या प्रसाद सिद्धयर्थं वांछितार्थ-प्राप्तये च जपे विनियोगः।

न्यास

ॐ ऐं क्लीं सौः ह्रीं सर्व ज्ञतायै ह्रांगां ब्रह्मात्मने
ॐ-५ नित्य तृप्तये ह्रींगीं विश्वात्मने
ॐ-५ अनादि बोधितायै ह्रूं गूं रुद्रात्मने
ॐ-५ स्वतन्त्रतायै ह्रैं गैं परमेश्वरात्मने
ॐ-५ नित्यमलुप्तायै ह्रौं गौं सदाशिवात्मने
ॐ-५ अनन्तायै ह्रः गः सर्वात्मने

करन्यास

अंगुष्ठाभ्यां नमः
तर्जनीभ्यां स्वाहा
मध्यमाभ्यां वषट्
अनामिकाभ्यां हुं
कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्
करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्

अंगन्यास

हृदयाय नमः
शिरसे स्वाहा
शिखायै वषट्
कवचाय हुं
नेत्र त्रयाय वौषट्
अस्त्राय फट्

ध्यान मन्त्र

धवल नलिने-राजच्चन्द्र-मध्ये निषण्णाम्
स्व-कर-कलित-पाशं साभयं सांकुशं च।
अमृत वपुषमिन्दु-क्षीर-वर्णं त्रिनेत्रम्
प्रणमित सुर-वृन्दं दिक्षु सम्वादयन्तम्॥
स्फुटित नलिन-संस्थं मौलि बद्धेन्दु-रेखा-
गलदमृत-रसार्द्रं चन्द्र वह्न्यर्क नेत्रम्।
स्व-कर-कलित-मुद्रा-वेद-पाशाक्ष-मालं,
स्फटिक-रजत-मुक्ता-गौरमीशं नमामि॥

पंचोपचार मानस पूजन

१-श्रीमन्महा-त्रिपुरसुन्दर महागणपति संवादाग्न्यमृत रुद्रेभ्यः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः
अंगुष्ठ कनिष्ठिकाभ्यां

२-श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दरी महागणपति सम्वादाग्न्यमृत रुद्रेभ्यः हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः
तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां

३-श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दर महागणपति सम्वादाग्न्यमृत रुद्रेभ्यः यं वाय्वात्मकं धूप समर्पयामि नमः
अंगुष्ठ तर्जनीभ्यां

४-श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दर महागणपति सम्वादग्न्यमृत रुद्रेभ्यः वं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः
अंगुष्ठ मध्यमाभ्यां

५-श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दर महागणपति सम्वादाग्न्यमृत रुद्रेभ्यः रं अमृतात्मकं नवेद्य समर्पयामि नमः अंगुष्ठानामिकाभ्यां

इसमें जिस प्रकार पंचोपचार मानस पूजन में गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य समर्पण का जो विवरण आया है, उसी क्रम में बोलते हुए समर्पण करें। 'श्री वांछा कल्प लता साधना' में पूरे मन्त्र जप के दौरान घी का दीपक निरन्तर जलते रहना चाहिए। इस अनुष्ठान के चार भाग हैं और यदि आप ध्यान से इनका अध्ययन करेंगे, तो यह स्पष्ट होगा कि ये मन्त्र कितने महान मन्त्र । हैं

श्री वांछा कल्प लता सम्पूर्ण अनुष्ठान मन्त्र

१-श्रीं ह्रीं क्लीं हस्सौं: सौं: गुं गुं गुं ग्लौं ग्लौं ग्लौं अमृत कुम्भाय गं गं गं ऐं ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं वं वं वं सं सं सं क्षं क्षं क्षं हस्ख्फ्रें क्षिप्रि- भैरवाय प्रसीद।

ॐ वं ठं अमृत-रुद्राय श्रां ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

२-ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं, ह् स् क्ष् म् ल् व् र् य् आनन्द-भैरवाय भैरवी-सहिताय वं अमृतं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं वं ठं अमृत रुद्राय श्रां ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

३-ऐं ठं ठं ठं, कं ठं ठं ठं, एं ठं ठं ठं, ईं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं, क्लीं ठं ठं ठं, सं ठं ठं ठं, कं ठं ठं ठं, हं ठं ठं ठं, लं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं, सौं: ठं ठं ठं, सं ठं ठं ठं, कं ठं ठं ठं, लं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं।

ॐ ह्रीं वं ठं अमृत रुद्राय श्रां ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानाय स्वाहा।

४-श्रीं श्रीं श्रीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं, ऐं ऐं ऐं, सौं: सौं: सौं:, ॐ ॐ, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, कं कं कं, एं एं एं, ईं ईं ईं, लं लं लं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, हं हं हं, सं सं सं, कं कं कं, हं हं हं, लं लं लं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, सं सं सं, कं कं कं, लं लं लं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, सौ: सौ: सौः, ऐं ऐ ऐं, क्लीं क्लीं क्लीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, प्रसीद प्रसीद, मम मनो ईप्सितं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं व ठं अमृत-रुद्राय श्रां ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

प्रतिदिन इन चारों मन्त्रों का २१ बार जप अवश्य ही करना है, जब इस मन्त्र जप का अनुष्ठान २१ दिन तक पूरा हो जाय तो इसका विशेष प्रभाव सामने आता है। मन्त्र अनुष्ठान के पश्चात् साधक वांछा कल्पलता यन्त्र धारण कर लें अथवा गले में पहिन लें, अन्य सामग्री अपने पूजा स्थान में ही रहने दें।

इस अनुष्ठान के अलग-अलग कुछ विशेष प्रयोग भी हैं, जिनका निम्न प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है -

१-यदि इस मन्त्र की एक माला मन्त्र जप कर अर्थात् १०८ बार उच्चारण कर किसी से मिलने के लिए जाएं और कोई भी कार्य कहें तो सामने वाला तुरन्त वह कार्य कर देता है।

२-यदि इस मन्त्र की पांच माला मन्त्र जप कर किसी अधिकारी या बहुत बडे व्यापारी के सामने जाकर अपनी इच्छा प्रकट करें अथवा प्रमोशन, स्थानान्तरण या कोई एजेन्सी प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त करें, तो वह निश्चय ही स्वीकार कर ली जाती है।

३- यदि इस मन्त्र की गुलाब के पुष्पों के सामने पांच माला मन्त्र जप कर वे गुलाब के पुष्प दुकान या फैक्टरी में बिखेर दें तो दुकान पर किया गया तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है और व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होने लगती है।

(शेष भाग पृष्ठ संख्या २० पर देखें)

क्या प्रत्यक्ष भैरव सिद्धि सम्भव है ?

हां

काल विकराल बल भैरव साधना से

भैरव साधना को तीव्र साधना माना गया है और जब संकट में, भय में साधक भैरव को पुकारता है तो भैरव तत्काल उस साधक की रक्षा करते हैं, भैरव सिद्धि बिना न तो कोई शुभ कार्य पूर्ण होता है और न हो कोई यज्ञ अनुष्ठान, अतः यह साधना गृहस्थ साधकों को अवश्य करना चाहिए।

कलियुग में भैरव की साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है, क्योंकि इससे कार्यसिद्धि तुरन्त मिलती है और बहुत ही कम प्रयास में प्रत्यक्ष दर्शन हो सकते हैं।

यों तो भैरव से सम्बन्धित कई साधनाएं प्रचलित हैं, परन्तु एक महत्वपूर्ण और गोपनीय साधना आगे के पृष्ठों में दे रहा हूं जिससे कि भैरव तुरन्त प्रसन्न होकर साधक को मनोवांछित वरदान देने में समर्थ हो पाते हैं।

यह साधना कृष्ण पक्ष की पंचमी से प्रारम्भ की जाती है, साधक किसी भी महीने में इस साधना को प्रारम्भ कर सकता है, प्रातःकाल उठ कर साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ मन में यह विचार करे, कि मैं भैरव की साधना करने जा रहा हूं, मैं भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूं।

साधक पूरे साधना काल में काले वस्त्रों का ही प्रयोग करे, काली धोती और ऊपर काला कुरता पहन सकता है, साधना के बाद भी वह दूसरे रंग के वस्त्रों का प्रयोग न करे।

यह साधना यदि जंगल में, शिवालय में, नदी तट पर या श्मशान में करें तो ज्यादा उचित रहता है, घर पर इस प्रकार की साधना का प्रयोग नहीं

करना चाहिए, भैरव शीघ्र प्रसन्न होते हैं तो जल्दी ही नाराज भी हो जाते हैं, अतः साधक को सावधानी के साथ इस प्रकार की साधना हाथ में लेनी चाहिए।

जिस दिन साधना प्रारम्भ करें, उस दिन प्रातः मसूर, चने, मूंग और मोठ इन चारों धान्यों को बराबर मात्रा में लेकर पकावें और फिर इसके सोलह भाग कर सोलह पलास के पत्तों पर अपने सामने रख दें, प्रत्येक पत्ते पर तेल का दीपक लगावें और फिर इन सोलह पत्तों से पहले और अपने सामने भैरव की काल्पनिक मूर्ति या **भैरव यन्त्र** स्थापित करें उसका गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप-दीप आदि से पूजन करें।

इसके बाद साधक हाथ में अक्षत लेकर उन्हें चारों तरफ बिखेरता हुआ आत्म रक्षा मन्त्र पढ़े—

आत्मरक्षा मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः पूर्वे। ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रीं नमः आग्नेये ॐ ह्रीं श्रीं नमः दक्षिणे। ॐ ग्लूं ब्लूं नमः नैर्ऋत्ये ॐ पूं पूं सं सं नमः पश्चिमे। ॐ स्रां स्रां नमः वायव्ये। ॐ स्रां व्रं भ्रं फट् नमः ऐशान्ये। ॐ ग्लौं ब्लूं नमः ऊर्ध्वे। ॐ घ्रां घ्रं घ्रः नमः अधोदेशे।

इसके बाद भैरव को हाथ जोड़ कर नमस्कार करें।

ॐ करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिः।
तरुण तिमिर नीलो व्यालयज्ञोपवीती॥
ऋतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

ध्यान के बाद साधक ईशान दिशा की तरफ मुंह करके भैरव मन्त्र पढ़ें, एक लाख मन्त्र जप से यह सिद्ध हो जाता है और भैरव प्रत्यक्ष दर्शन दे देते हैं।

मैंने ऊपर बताया कि भैरव का स्वरूप अत्यन्त विकराल और क्रूर होता है, अतः साहसी और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ही अपनी इन आंखों से उनके दर्शन करने में समर्थ हो पाते हैं, इसीलिए स्त्रियां, वृद्ध, बालक तथा कमजोर व दुर्लभ चित्त वाले व्यक्तियों को भैरव साधना नहीं करनी चाहिए।

फिर निम्न मन्त्र का जप करें, इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

भैरव मन्त्र

ॐ व्रां ह्रीं ह्रूं हः। क्षां क्षीं क्षूं क्षः। ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रः। घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रः। स्रां स्रीं स्रूं स्रः। भ्रों भ्रों भ्रों भ्रों क्लों क्लों क्लों क्लों। श्रों श्रों श्रों श्रों त्रों त्रों त्रों त्रों हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं फट् सर्वतो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरव नाथ नाथ हुं फट्॥

यह मन्त्र अत्यन्त शक्तिशाली है और एक लाख मन्त्र जप पूरा करते ही भैरव के दर्शन हो जाते हैं।

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है और इसमें किसी प्रकार की अगरबत्ती या दीपक निरन्तर लगाने की आवश्यकता नहीं है, पहले दिन जो सोलह पलाश के पत्तों पर भोग लगाया जाता है, उसे मन्त्र जप के बाद वहीं छोड़ कर आ जाना चाहिए, क्योंकि भैरव का वाहन श्वान है और सही अर्थों में वह खाद्य पदार्थ श्वान को ही समर्पित होता है।

यदि श्मशान में श्वान उपस्थित न हो तो उस पके हुए धान्य को एकत्र कर किसी श्वान के सामने रख दें।

इसके बाद नित्य इस प्रकार का विधान करने की आवश्यकता नहीं है।

यह मन्त्र जप चालीस दिन में या बीस दिन में पूरा हो जाना चाहिए, जब यह विधान या मन्त्र जप पूरा होने को होता है तो उससे तीन दिन पहले भैरव के आने की अनुभूति स्पष्ट रूप से हो जाती है, साथ ही साथ उनके पैरों में बंधे घुंघरू स्पष्ट सुनाई देते हैं और भैरव की अस्पष्ट आकृति भी दिखाई देने लगती है।

जिस दिन ऐसी आकृति दिखाई दे, उसके दूसरे दिन उस भैरव को मूर्ति या भैरव के यन्त्र को नीले रंग का वस्त्र समर्पित करें, तेल और सिन्दूर लगावे, धूप अगरबत्ती के साथ गुग्गुल का धूप भी समर्पित करें, उसी दिन नैवेद्य के साथ तेल चुपड़ी हुई आटे की रोटी पर गुड़ रख कर और मोठ या उड़द की दाल भिगो कर उसे पीस कर मसाले मिला कर बड़े बना कर नैवेद्य के साथ समर्पित करें।

यदि उस दिन भैरव प्रत्यक्ष न हों तो दूसरे दिन भी ऐसा ही करें, यदि किसी कारण वश दूसरे दिन भी भैरव के दर्शन न हों तो तीसरे दिन भी वैसा ही विधान करें, उस रात्रि को निश्चय ही भैरव के दर्शन हो जाते हैं।

यह हो सकता है कि भैरव विकराल रूप में अथवा सौम्य रूप में दर्शन दें, पर किसी भी हालत में डरें नहीं और नम्रता से उनका मन्त्र जप करता रहे।

जब भैरव प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहें, तब साधक उसके सामने तेल का दीपक लगा कर जो प्रसाद बनाया हुआ है, वह उनके दाहिने हाथ में दे दें, ऐसा करने से भैरव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं और मनोवांछित वरदान दे देते हैं।

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है और यदि श्मशान में या नदी तट पर साधना की जाय तो ज्यादा उचित रहता है, इस बात का ध्यान रहे कि वह स्थान सामान्यतः निर्जन हो।

साधना के सम्बन्ध में जो भी अनुभव हो वे किसी को बतावे नहीं और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें तथा काले वस्त्र धारण किये रहें।

भैरव प्रसन्न होने के बाद नित्य साधक को स्वर्ण प्रदान करते हैं, यही नहीं अपितु जब किसी प्रकार की कोई इच्छा भैरव के सामने रखते हैं, तो भैरव उस इच्छा की पूर्ति अवश्य ही करते हैं।

देश के कई विशिष्ट योगी और साधक भैरव साधना सम्पन्न कर चुके हैं, और इसी प्रकार से उन्होंने जीवन में पूर्णता प्राप्त की है, इस बात का ध्यान रखें कि यह साधन किसी योग्य गुरु या साधक की देख रेख में ही सम्पन्न होनी चाहिए अन्यथा कुछ विपरीत होने की स्थिति में साधक ही पूर्ण रूप से जिम्मेवार होता है।

इस साधना की पूर्णता के बाद व्यक्ति शत्रुओं पर हावी रहता है, किसी भी घटना को जानने के लिए उसे एक बार मन्त्र उच्चारण करना पड़ता है, तो भैरव उसके कान में कह देते हैं, दूसरे के मन की बात भी भैरव साधक को उसके कान में कह देते हैं, दूर स्थित सामान को लाकर देने में सहायक होते हैं, हजारों मील दूर की घटनाओं को प्रत्यक्ष

दिखाते हैं और किसी भी व्यक्ति के भूतकाल या भविष्यकाल को जाना जा सकता है, इसके साथ ही साथ जब साधक खाद्य पदार्थ की इच्छा करता है तो उसे तुरन्त खाद्य पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं, इसी प्रकार धन धान्य स्वर्ण आदि की प्राप्ति भी भैरव के द्वारा सम्भव है।

वस्तुतः भैरव साधना कलियुग में महत्वपूर्ण एवं शीघ्र फलदायक है।

(पृष्ठ संख्या १६ का शेष भाग)

४- यदि तांबे के गिलास में पानी भर कर इस मन्त्र का २१ बार उच्चारण कर वह पानी रोगी को पिला दिया जाय तो वह रोग मुक्त हो जाता है अथवा ऐसे पानी को बाल्टी में मिला कर स्नान कराया जाय तो उसके शरीर का सारा रोग समाप्त हो जाता है।

५- यदि काली मिर्च के १०१ दानों पर नाम लेकर इस मन्त्र की १५ माला मन्त्र जप कर वे काली मिर्च के दाने शत्रु के घर में किसी प्रकार से फेंक दिये जांय तो उसके घर के सभी सदस्य बीमार बने रहते हैं, लक्ष्मी का नाश हो जाता है तथा घर में कलह लड़ाई बढ़ जाती है, यदि इन काली मिर्च को दक्षिण दिशा में जाकर मंगलवार के दिन जमीन में गाड़ दें तो शत्रु का मरण हो जाता है।

६- यदि वांछा कल्पलता यन्त्र के सामने तेल का दीपक लगा कर नित्य तीन माला मन्त्र जप ११ दिन तक करे तो सभी प्रकार का राज्य भय समाप्त हो जाता है और स्थितियां अनुकूल होने लगती हैं।

संक्षेप में कहा जाय तो यह निश्चित है कि जिसने वांछा कल्पलता सिद्धि प्राप्त कर ली तो उसने अपने जीवन में एक श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त कर ली।

शिष्य का व्यवहार

शिष्य को सदैव यह बात याद रखनी चाहिए कि गुरु प्रेम के प्रभाव से ही जिस प्रकार अन्तःकरण की शुद्धता और सात्विकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती है उसी प्रकार ईर्ष्या, द्वेष, आडम्बर, विषयाचरण वृत्ति से ये शुभ भावनाएं दिन प्रतिदिन घटती हैं। गुरु आश्रम, गुरु दरबार, गुरु सन्निध्य तो धधकती हुई प्रज्वलित योगाग्नि का केन्द्र है, जिस प्रकार ये अग्नि शिष्य के पाप को जला कर शिवत्व जाग्रत कर देती है, उसी प्रकार शिष्य को आश्रम में रहते हुए अथवा बाहर रहते हुए साधना रहित विषय विकारों से युक्त जीवन जीने से पुण्य नितेस्ज हो जाता है। सभी शिष्यों को अपने अन्य गुरु भाइयों में आत्मवत् गुरुदेव को ही देखना चाहिए, कभी भी एक दूसरे के गुण-दोषों को न देखें, जो दोष देखते हैं वे अपने ही दोष बढ़ाते हैं, अपनी ही योग-शक्ति घटा लेते हैं।

आश्रम में जाने वालों को अमर्यादित, स्वच्छन्द तथा मनमाना व्यवहार कर अपनी प्राप्त शक्ति को नष्ट नहीं करना चाहिए। जहां तहां बैठक जमाना, गप्पबाजी करना, लोकनिन्दा करना, एक दूसरे पर दोषारोपण करना योग सिद्धि को नष्ट कर देता है, आश्रम के प्रति निष्ठा, श्रेष्ठ आचरण, सत्कर्म नियमित जीवन होने से कुण्डलिनी शक्ति के जागरण का महान अनुभव सहज ही प्राप्त होता है। गुरु तो शिष्यों की परीक्षा लेते रहते हैं, इसलिए शिष्य को हर समय अपने व्यवहार में पूर्ण सन्तुलन बनाये रखते हुए कार्य करना चाहिए।

देखन में छोटे लगें सिद्ध फल दें पूर्ण

तीव्र, तीक्ष्ण लक्ष्मी प्रयोग

जब भी आवश्यकता हो अवश्य करें

एक कहावत है कि जहां कील की जरूरत पड़ती है वहां कील से ही काम चलता है, तलवार का कोई उपयोग नहीं है भले ही तलवार लम्बी-चौड़ी तीखी धारदार और मजबूत हो, उसी प्रकार दिन-प्रतिदिन के कार्यों में कई बार कुछ ऐसे अवसर आते हैं जब छोटी-छोटी बाधाओं के कारण कार्य रुक जाते हैं। यह तो निश्चित है कि इन छोटे-मोटे कार्यों के लिए बड़े-बड़े अनुष्ठान सम्पन्न नहीं किये जा सकते।

साबर साधनाओं के संबंध में चमत्कार शब्द वास्तव में ही छोटा है क्योंकि इनका प्रत्यक्ष प्रमाण साधक को हाथों हाथ प्राप्त होता है और जो वह नहीं सोच सकता उससे भी अधिक लाभ उसे प्राप्त होता है।

आगे के पृष्ठों में साधकों के लिए कुछ विशिष्ट लघु प्रयोग दिये जा रहे हैं, इन प्रयोगों को आप अपने स्वयं के लिए भी कर सकते हैं तथा किसी अन्य के लिए भी कर सकते हैं, अपने लिए प्रयोग करते समय हाथ में जल लेकर संकल्प लेंगे तथा किसी अन्य के लिए प्रयोग करते समय उसका नाम लेकर संकल्प लेंगे और यह स्पष्ट रूप से उच्चारण करेंगे कि मैं (अमुक) के लिए यह प्रयोग कर रहा हूं और मेरे इस प्रयोग का फल उसे ही प्राप्त हो। भगवान शिव मेरा कल्याण करें और मुझे मेरी साधना में सफलता प्रदान करें। साधक को चाहिए कि इन सभी प्रयोगों को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ सम्पन्न करें और जैसा लिखा गया है उसी अनुरूप से कार्य करें। श्रद्धा एव विश्वास की शक्ति आदिदेव शिव की कृपा और गुरु गोरखनाथ के प्रसाद से प्राप्त इन प्रयोगों को सम्पन्न करने से अचूक और तुरन्त सफलता प्राप्त होती है।

१-वशीकरण प्रयोग

वशीकरण का तात्पर्य किसी को भी अपने अनुकूल बना लेने की क्रिया है, वह चाहे पुरुष हो

या चाहे स्त्री। यदि यह प्रयोग हम उस पर आजमा लें तो इसका तुरन्त और अनुकूल प्रभाव अनुभव होता है, आप स्वयं इस प्रयोग को करके देख सकते हैं।

किसी भी शुक्रवार के दिन **पांच हकीक पत्थर** लें और एक **सियारसिंगी** प्राप्त कर लें फिर सिन्दूर से सियारसिंगी को पूरी तरह से रंग दें और उस पर कुंकुम से उस पुरुष या स्त्री का नाम लिखें जिसे आपको अपने पूर्ण वश में करना है, यह प्रयोग रात्रि को करें।

जिस सियारसिंगी पर उसका नाम लिखा है उसके आगे पांच हकीक पत्थर रख दें फिर सामने बैठ कर निम्न मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करें—

मन्त्र

ठं ठं बिरमा ठं ठं विष्णु। अमुक को वश में करे रुद्र को तिरशूल। न माने तो बांधे, रुंडे, वश में होय। कहियो करे, काली माई की दुहाई। ठं ठं॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब एक लाल कपड़े में वह सियारसिंगी तथा पांचों हकीक पत्थर बांध कर किसी मिट्टी के बर्तन में या कुल्हड़ में रख दें और उसे पानी से भर दें। इस कुल्हड़ को घर में किसी भी स्थान पर रख दें या जमीन में गाड़ दें। जब तक यह वस्तुएं कुल्हड़ में रहेंगी तब तक वह व्यक्ति पूर्णतः वश में रहेगा और जिस प्रकार से चाहें उसी प्रकार से वह जीवन में आज्ञा का पालन करता रहेगा, यह प्रयोग अनुभूत है और इसका तुरन्त प्रभाव होता है।

२-व्यापार वर्द्धक प्रयोग

यदि व्यापार कमजोर पड़ गया हो और व्यापार में उन्नति नहीं हो रही हो या आमदनी कम हो गयी हो तो इस प्रयोग को किया जा सकता है।

किसी भी शनिवार की रात को एक मुट्ठी भर काली मिर्च तथा **तीन गोमती चक्र** लेकर किसी लाल पोटली में बांध दें और अपने सामने रख कर एक तेल का दीपक लगा दें तथा निम्न मन्त्र की पांच माला मन्त्र जप उस पोटली पर करें—

मन्त्र

भंवरा भंवर करे मन मेरा। डंडी खोल वैपार बढ़ेरा। वैपार बढ़ा और कारज कर। नहीं करे तो काली मैया काल कालजो फोड़ खावे ठं ठं फट्॥

दूसरे दिन सुबह दुकान पर जाकर दुकान को स्वच्छ पानी से धो लें, और दरवाजे पर ही चौखट पर वह लाल पोटली बांध दें। ऐसा करने पर व्यापार बढ़ने लगेगा, और जब तक वह पोटली बंधी हुई रहेगी तब तक बराबर आर्थिक उन्नति होती रहेगी। वास्तव में ही यह प्रयोग आजमाया हुआ है और साधक इस छोटे पर महत्वपूर्ण प्रयोग को सम्पन्न कर इसका चमत्कार देख सकते हैं।

३-रोग निवारण प्रयोग

यदि किसी पुरुष या स्त्री को बीमारी हो और डाक्टरों की समझ में नहीं आ रही हो अथवा इलाज कराने पर भी उसमें सफलता नहीं मिल रही हो तो इस प्रयोग को आजमाया जा सकता है।

मैंने अनुभव किया है कि यदि इस प्रयोग को किया जाय तो रोगी को तुरन्त आराम अनुभव होता है और यदि रोग बड़ा है तो दो-तीन बार इस प्रयोग को करने से रोगी को रोग से मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

किसी भी मंगलवार के दिन तांबे के गिलास में पानी भर लें और उसमें **चिरमी के तीन दाने** डाल दें और फिर उस गिलास को सामने रख कर निम्न मन्त्र का २१ बार उच्चारण करें—

मन्त्र

जै जै गुणवन्ती। वीर हनुमान। रोग मिटे और खिले खिलाव। कारज पूरण करें पवन सुत। जौ न करें तो मां अंजनी की दुहाई। सबद सांचा

पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

इसके बाद वह पानी रोगी को पिला दें तथा चिरमी के दानों को उसके चारों ओर घुमा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें, ऐसा करने पर रोगी को तुरन्त आराम अनुभव होता है।

मेरा यह अनुभव है कि किसी को भूत-प्रेत बाधा हो या उसे मिरगी आ रही हो या रात को बड़बड़ाता हो अथवा उसे कोई ऐसी बीमारी हो जो समझ में नहीं आ रही हो तो इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, यह छोटा सा प्रयोग है परन्तु इसका असर तुरन्त एवं अचूक होता है। मैंने इस प्रयोग को जितनी बार भी आजमाया है उतनी ही बार मुझे सफलता मिली है। साधक को चाहिए कि वह अपने पास चिरमी के १०-१५ दाने रखे और एक बार के प्रयोग में तीन चिरमी के दाने उपयोग करें. वास्तव में ही यह प्रयोग जन कल्याण हेतु करना चाहिए।

४-कार्य सिद्धि प्रयोग

यदि कोई जरूरी काम हो या किसी अधिकारी से किसी बात के लिए "हां" करानी हो अथवा जिस काम के लिए हम जा रहे हों और वह कार्य अवश्य ही पूरा होवे तो इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।

रवाना होने से पहले एक बिल्ली की नाल के चार टुकड़े कर अपने पैर के नीचे मसल कर यात्रा करें तो वह जिस काम के लिए रवाना होता है वह कार्य अवश्य ही पूरा होता है। उदाहरण के लिए रुपये लेने हों, व्यापारिक समझौता करना हो या लड़की की सगाई आदि के लिए जाना हो या किसी अधिकारी से सिफारिश करवानी हो अथवा ऐसा कोई भी कार्य हो तो इस प्रयोग को आजमाया जा सकता है।

मेरे अनुभव में यह आया है कि इस प्रकार का प्रयोग संपन्न करने पर अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है और हम जिस काम के लिए रवाना होते हैं वह कार्य निश्चित रूप से सिद्ध होता है।

५-आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग

कई बार प्रयत्न करने पर भी आकस्मिक धन प्राप्ति की सभावनाएं नहीं बने तो इस प्रयोग को आजमाना चाहिए।

इस प्रयोग से कई लाभ हो सकते हैं, यदि घर में द्रव्य गड़ा हुआ हो तो इसके द्वारा आसानी से पता चल जाता है, यदि दुर्भाग्य पीछा नहीं छोड़ रहा हो तब भी इस प्रयोग को आजमाया जा सकता है, यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

किसी भी शुक्रवार के दिन ठीक दोपहर को अथवा मध्य रात्रि में यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है, **एक मधुरूपेण एकमुखी रुद्राक्ष** लेकर जहां तीन रास्ते मिलते हों वहां पर जाकर किसी बर्तन में या मिट्टी के पात्र में वह एकमुखी रुद्राक्ष, सवा पाव मिठाई, सात लाल मिर्च तथा सात नमक की डली लेकर चौराहे पर रख दें, और हाथ में जो पानी का लोटा लेकर जावें उस पानी से उस मिट्टी के बर्तन के चारों ओर पानी का घेरा खींच लें और वापिस घर को लौट जावें।

वापिस लौटते समय पीछे मुड़ कर नहीं देखें तो कुछ दिनों में उसे बहुत अच्छे अनुभव एवं अनुकूल समाचार मिल जाते हैं या लॉटरी से धन अथवा आकस्मिक द्रव्य प्राप्त होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

इस प्रयोग से निश्चित रूप से दुर्भाग्य समाप्त हो जाता है और उसी दिन से उसकी उन्नति होने लगती है।

वास्तव में ही यह प्रयोग मैंने कई बार आजमाया है और जब-जब भी इस प्रयोग को आजमाया है पूर्ण सफलता ही प्राप्त हुई है।

ऊपर मैंने कुछ प्रयोग उन साधकों के लिए दिये हैं जो चमत्कार में विश्वास करते हैं और जो तुरन्त सफलता चाहते हैं उनको चाहिए कि वे इन प्रयोगों को आजमाएं

या अपने परिचितों को बताकर उन्हें इन प्रयोगों को करने के लिए कहें तो वे यह जान कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे कि उनका प्रभाव तुरन्त प्रामाणिक और अचूक होता है।

६-अप्सरा प्रयोग

किसी भी शुक्रवार को किसी मजार पर या उसके पास **बीर बहूटी** रख दें तथा रविवार को वहां से वापिस ले आवें।

फिर रविवार की रात को कमरे में उत्तर की ओर मुंह कर **अप्सरा माला** से ११ माला मन्त्र जप करें।

मन्त्र

अप्सरा रे अप्सरा। मैं तेरो भरतार। तू मेरी छाया। मेरा कारज कर। वश में होय। हुक्म मान। जो कहूं सो कर, जो न करे तो पीर सुलेमान की दुहाई ।।

ग्यारहवीं माला पूरी होते-होते अप्सरा सामने आवे तो ताली बजाकर वचन ले लें, ऐसा करने पर वह सुन्दरी अप्सरा जीवन भर साधक के वश में रहती है।

७-विद्वेषण प्रयोग

विद्वेषण का तात्पर्य परस्पर लड़ाई झगड़े करवाना है। यदि शत्रु परेशान कर रहा हो और बाधाएं दे रहा हो तो इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।

किसी भी मंगलवार के दिन दोपहर को श्मशान जाकर वहां से कोई हड्डी का टुकड़ा ले आवें और उसे अपने घर में लाने की अपेक्षा मार्ग में ही किसी काले कपड़े में **पांच हकीक नग** और वह हड्डी का टुकड़ा बांध कर शत्रु के घर में डाल दें, तो उसी दिन से शत्रु के घर में परस्पर लड़ाई झगड़े प्रारम्भ हो जाएंगे, और घर के सदस्यों में मतभेद मारपीट और लड़ाई झगड़े बने रहेंगे।

८-हाजरात प्रयोग

यह एक प्रकार से मुस्लिम तन्त्र की साधना है लेकिन साबर साधनाओं में जहां मुसलमान लोग भैरव तथा हनुमान की दुहाई देते हुए साबर मन्त्र का उच्चारण करते हैं, उसी प्रकार हिन्दू लोग भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकते हैं। जब परी हाजरात एक बार वश में हो जाती है तो किसी चोरी इत्यादि अथवा गुमे हुए बालक के विषय में अथवा दूरस्थ स्थित किसी रिश्तेदार के समाचार मालूम कर सकते हैं।

इसका प्रयोग इस प्रकार है – किसी भी शुक्रवार की शाम को जब सूर्य डूब रहा हो तब साधक किसी मजार या कब्र के पास जाएं और उसे भक्ति भाव से प्रणाम करें, अपने साथ एक पानी का लोटा और हीने का इत्र साथ लेकर आवें। साथ ही छोटा सा हरे रंग का आधा मीटर लम्बा वस्त्र तथा **सिद्धि फल** साथ लेते जावें, वहां जा कर मजार को प्रणाम करें और उसके सामने कपड़ा बिछा दें, उस पर खुद बैठ जांय और अपने चारों ओर पानी का घेरा बना दें, और फिर बांएं हाथ से **सिद्धिफल** लेकर मुट्ठी में बन्द कर लें और दाहिने हाथ से **हकीक माला** के द्वारा निम्न मन्त्र की एक माला फेरें—

मन्त्र

ॐ हिलिया रे हिलिया। सारा काम सिरिया। अणंग करे दुहाई। परी को वश में लाई जबर जूर वश में लाई। न हिले, न हले। कियो करे। हुकुम में रहे। कारज करे। न करे तो अणंग पाल की दुहाई।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो लोटे में बाकी बचा हुआ पानी मजार पर चढ़ा दें और हीने का ईत्र लगा दें, पास में ही वह हरा वस्त्र रख दें और सिद्धि फल को ले कर घर आ जांय। **'परी हाजरात'** पूर्णतः वश में हो जाती है और उसके बाद जब भी उसे आज्ञा दी जाती है तो उस आज्ञा का तुरन्त तथा निश्चित रूप से पालन होता है।

ये आठों प्रयोग जब आवश्यकता हो तभी सम्पन्न करें बिना कारण परीक्षा के उद्देश्य से अथवा मजाक मस्ती के रूप में साधना प्रयोग करना उचित नहीं है। ●

भविष्य आइने के समान देखा जा सकता है

केवल

पञ्चांगुली साधना से

भविष्य दर्शन तथा हाथ की रेखाओं की देवी पञ्चांगुली देवी है और जिसने यह साधना सिद्ध नहीं की वह सही रूप से न तो ज्योतिषी बन सकता है और न ही अपने स्वयं के भविष्य के बारे में देख सकता है, यह साधना सरल, दिव्य और सुगम है—

व्यक्ति किसी दूसरे का भविष्य कथन करता है, तो उसमें आत्मविश्वास अवश्य होना चाहिए, केवल गोल माल बात कहने से भविष्य कथन की सार्थकता नहीं है और यह आत्मविश्वास तभी उत्पन्न हो सकता है जब उसने स्वयं कोई साधना अथवा सिद्धि प्राप्त की हो। साधना का बल ही उसका वास्तविक बल होता है जो उसे हाथ की रेखाओं अथवा जन्मकुण्डली का ज्ञान कराता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि सामान्य व्यक्ति के लिए इस विशेष साधना की क्या उपयोगिता है, हर व्यक्ति अपने जीवन में आगे घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी के सम्बन्ध में उत्सुक रहता है, यदि आज आपको यह जानकारी हो जाय कि आने वाले समय में मेरे घर में बीमारी आने वाली है तो इस सम्बन्ध में आप उचित उपाय कर घटना की तीव्रता को कम कर सकते हैं, समय रहते ऐसा उपचार कर सकते हैं, कि जो दुष्प्रभाव आपको आकस्मिक रूप से मिलता है वह कम से कम बन पड़े। यदि व्यापार

में आगे अच्छे योग और आर्थिक लाभ की जानकारी पूर्ण रूप से मिल जाय तो व्यापारी आदमी बड़ी रिस्क ले सकता है बड़ा पूंजीनिवेश कर सकता है और हजारों के लाभ को लाखों के लाभ में बदल सकता है।

पञ्चांगुली साधना के पूर्ण जानकार ज्योतिषियों को तो उंगलियों पर गिना जा सकता है, जबकि पञ्चांगुली साधना में सिद्ध साधक योगी कई हैं लेकिन वे प्रचार से मुक्त केवल अपने लिए ही इस साधना के श्रेष्ठ लाभ को उपयोग में लाते हुए अपना कार्य करते रहते हैं। जिस प्रकार भगवान पर या अपने इष्ट पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार नहीं है, ऐसा कहीं नहीं लिखा है कि केवल ब्राह्मण को ही साधना सिद्धि प्राप्त होगी अथवा जिसके माता-पिता महान हैं तो पुत्र को साधना का लाभ अपने आप मिल जायेगा, साधना करने वाले को ही सिद्धि प्राप्त होगी और यह सिद्धि प्राप्त कर वास्तव में साधक ईश्वर को धन्यवाद देता है कि तुमने मुझे जिस निमित्त बनाया मैंने उसका उपयोग किया है।

वर्तमान समय में पञ्चांगुली साधना की उपयोगिता तो विशेष है, जीवन में साधनाओं के अवसरों का तो भली भांति उपयोग कर लेता है, वही सफल हो सकता है, जो जीवन की दौड़ में पीछे रह जाता है, उसे परिवार के सदस्य भी महत्व नहीं देते। आपका व्यापारिक सहयोगी आपके साथ भविष्य में कैसा बरताव करेगा, आपके अधिकारी से आगे आपके संबंध कैसे रहेंगे, कौन सी संतान जीवन में विशेष उन्नति करेगी, आगे जीवन में बीमारी कब-कब आने वाली है, पत्नी के साथ कैसे संबंध रहेंगे, कौन आपका सहयोगी है और कौन शत्रु, इन सबका ज्ञान पञ्चांगुली साधना से सहज ही प्राप्त किया जा सकता है।
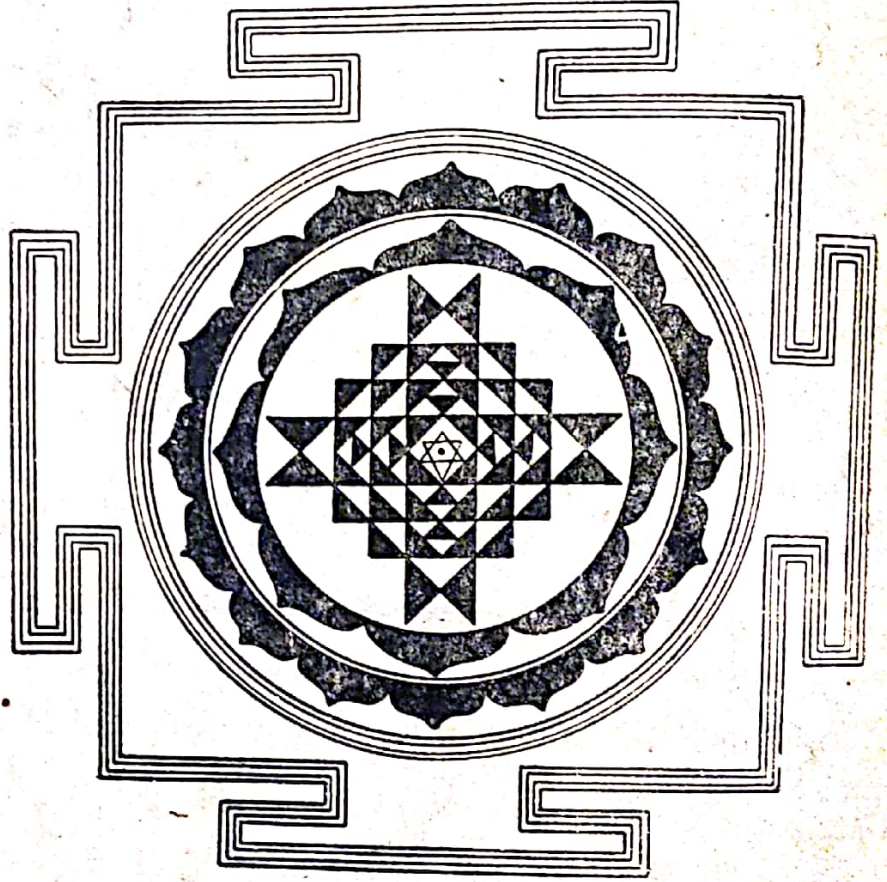
आगे कुछ विशेष विवरण दिया जा रहा है, जो कि पञ्चांगुली यन्त्र के निर्माण से सम्बन्धित है। ताम्र पत्र पर अंकित **पञ्चांगुली यन्त्र** का निर्माण तथा उनकी प्राण प्रतिष्ठा प्रक्रिया गुरु के निर्देशन में सम्पन्न करनी चाहिए। और जब एक बार पञ्चांगुली साधना का निर्णय ले लें, तो उसे पूर्ण अवश्य करें, नित्य प्रति मन्त्र जप में कुछ भी समय नहीं लगता है, मैं यह आशा करता हूं कि आप सभी साधक पञ्चांगुली साधना सम्पन्न कर अपने भविष्य दर्शन का नया मार्ग खोलेंगे।

पञ्चांगुली साधना

यह साधना किसी भी समय से प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु साधक को चाहिए कि वह पूर्ण

विधि विधान के साथ इस साधना को सम्पन्न करें, मन्त्र जप किसी तीर्थ भूमि, गंगा यमुना का संगम, नदी, पर्वत गुफा या किसी मन्दिर में की जा सकती है, साधक चाहे तो साधना के लिए घर के एकान्त कमरे का उपयोग कर सकते हैं।

पञ्चांगुली यन्त्र

इस साधना में यह आवश्यक है कि शुभ दिन शुद्ध समय में साधना स्थल को स्वच्छ पानी से धो लें, कच्चा आंगन हो तो गोबर से लीप लें, इसके पश्चात् चौकोर बाजोट पर धुला हुआ श्वेत वस्त्र बिछा दें और उस पर चावलों से यन्त्र का निर्माण करें, चावलों को पहले अलग-अलग पांच रंगों में रंग दें यन्त्र को सुघड़ता से सही रूप में बनावें, यन्त्र की बनावट में जरा सी भी गलती सारे परिश्रम को व्यर्थ कर देती है।

इसके पश्चात् यन्त्र के मध्य में ताम्र कलश स्थापित करें और उस पर लाल वस्त्र आच्छादित कर ऊपर नारियल रखें और फिर उस पर पञ्चांगुली देवी की मूर्ति स्थापित करें, इसके बाद पूर्ण षोडशोपचार से नौ दिन तक नित्य पूजन कर पञ्चांगुली मन्त्र का जप करें।

यह सही है कि आधुनिक समय में प्रत्येक स्थान पर प्रामाणिक विद्वान प्राप्त नहीं होते, जो कि यन्त्र का स्वरूप और विधि समझा सकें, परन्तु साधना में प्रामाणिक 'पञ्चांगुली यन्त्र' तथा 'पञ्चांगुली देवी चित्र' आवश्यक है।

सर्वप्रथम मुख शोधन कर पञ्चांगुली मन्त्र चैतन्य करें पञ्चांगुली देवी की साधना में चैतन्य मन्त्र "ई" है, अतः मन्त्र के प्रारम्भ और अन्त में "ई" सम्पुट देने से मन्त्र चैतन्य हो जाता हैं।

मन्त्र चैतन्य के बाद योनि-मुद्रा का अनुष्ठान किया जाय यदि योनि मुद्रा अनुष्ठान का ज्ञान न हो तो भूत लिपि विधान करना चाहिए।

इसके पश्चात् यन्त्र पूजन करके पञ्चांगुली देवी का ध्यान करें।

पञ्चांगुली ध्यान

पञ्चांगुली देवी महादेवी श्रीं सीमन्धर शासने।
अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशोशितुः ।।
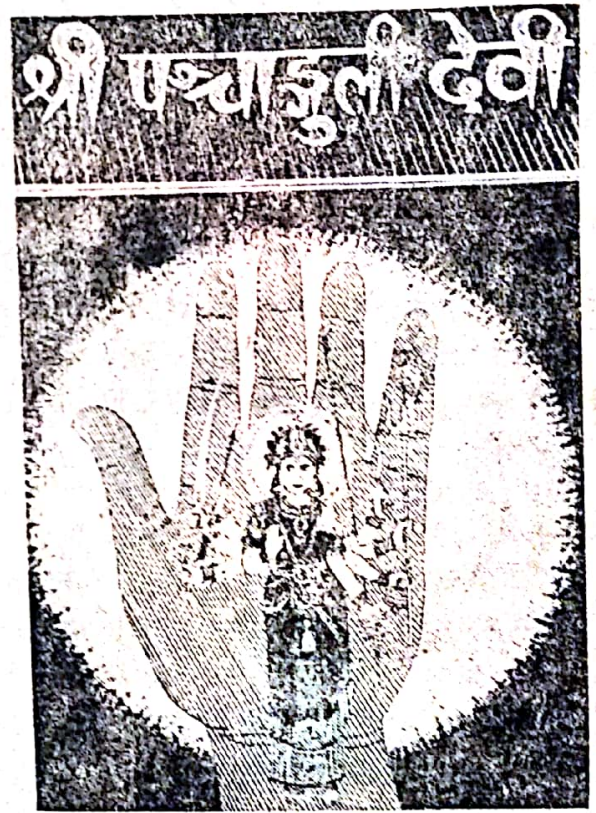
पञ्चांगुली देवी के सामने यह ध्यान करके निम्न पञ्चांगुली मन्त्र का जप करना चाहिए—

पञ्चांगुली मन्त्र

ॐ नमो पञ्चांगुली पञ्चांगुली परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दडमणिनी चौसठ काम विहंडिनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीपान-मध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोटिगमध्ये

डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषाणि-मध्ये गुणिमध्ये गारुणीमध्ये विनारिमध्ये दोषमध्ये दोषशरण्यमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपर बुरो जो कोई करे करावे जड़े जड़ावे चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता पञ्चांगुली देवी तपोवज्र निर्धार पड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा ।।

वस्तुतः यह साधना लम्बी और श्रम साध्य है, प्रारम्भ में गणपति पूजन, संकल्प, न्यास, मन्त्र, पूजा, प्रथमावरण पूजा, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्टम्, सप्तम, अष्टम और नवमावरण के बाद भूपतिसंहार करके यन्त्र से प्राण प्रतिष्ठा करनी करनी चाहिए।

इसके बाद पञ्चांगुली देवी को संजीवनी बनाने के लिए ध्यान, अन्तर्मातृका न्यास, कर न्यास, बहिर्मातृका न्यास करनी चाहिए, यद्यपि इस सारी विधि को लिखा जाय तो लगभग चालीस पचास पृष्ठों में आयेगी, यहां मेरा उद्देश्य पाठकों को मात्र इस साधना से परिचित कराना है।

देश के श्रेष्ठ साधकों का मत है कि यदि साधक ये सारे क्रिया कलाप न करके केवल घर में ताम्र पत्र अंकित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त पञ्चांगुली यन्त्र तथा संजीवनी संपुटयुक्त मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त पञ्चांगुली देवी चित्र स्थापित कर उसके सामने नित्य पञ्चांगुली मन्त्र २१ बार जप करे तो कुछ समय बाद स्वतः पञ्चांगुली साधना सिद्ध हो सकती है।

यह सुविधाजनक है और इसमें किसी प्रकार की त्रुटि सभव नहीं होती, पाठकों के आग्रह बराबर केन्द्र को प्राप्त होते रहे हैं अतः इस प्रकार पूर्ण विधि-विधान से सिद्ध कराकर मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त पञ्चांगुली देवी चित्र केन्द्र से भेजने की व्यवस्था की जा सकती है।

वस्तुतः यह साधना सरल है, क्योंकि इसमें किसी प्रकार की जटिलता का सामना नहीं करना पड़ता है, लेखक का स्वयं का यह अनुभव रहा है और उसने अपने शिष्यों से इस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न करवाई हैं और वे इस साधना में सफल हुए हैं।

अपने पूजा स्थान में पञ्चांगुली देवी चित्र की स्थापना साधक को यन्त्र के साथ ही कर देनी चाहिए और नित्य प्रातः स्नान कर २१ बार पञ्चांगुली मन्त्र का उच्चारण अवश्य करना चाहिए।

कुछ साधकों को एक मास में ही मन्त्र सिद्धि प्राप्त हो जाती है, कुछ को तीन मास में और कुछ को छः मास में सिद्धि प्राप्त होती है अतः धैर्य रखते हुए पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ अपने गुरु को साक्षी रखते हुए यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करता रहे और जब मन्त्र सिद्धि प्राप्त हो जाय तो इसका उपयोग अपने कल्याण के अतिरिक्त दूसरों के कल्याण हेतु भी अवश्य करें। पञ्चांगुली देवी के साधक के सामने तो हाथ की रेखाएं इस प्रकार स्पष्ट होती हैं मानों उस पर स्पष्ट रूप से अक्षर लिखे हैं और उसे केवल पढ़ना ही पढ़ना है। ●

लक्ष्मी साधना का

प्रामाणिक, सिद्धिदायक, जयप्रदायक चक्र

मोती शंख

मोती शंख के सम्बन्ध में लिखना अथवा उसके गुणों और प्रभाव की प्रशंसा केवल कुछ पृष्ठों में तो सम्भव ही नहीं है, लक्ष्मी के हाथ में स्थित यह शंख देवी का सबसे महत्वपूर्ण आभूषण है, श्रीयन्त्र की साधना तो सभी करते हैं, लेकिन जो मोती शंख की साधना करता है और अपने कार्य स्थल, व्यापार स्थल, घर अथवा भण्डार में मोती शंख स्थापित कर लें तो लक्ष्मी का वहीं स्थायी वास हो जाता है।

योगी स्वामी गिरिजेश्वरानन्द जी पूज्य गुरुदेव के संन्यासी शिष्य हैं, उन्होंने अपने ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर पत्रिका पाठकों को इस साधना के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए कुछ विशेष मोती शंख भी उपलब्ध कराये हैं, इस हेतु हम सभी की ओर से इनका बहुत-बहुत आभार।

आज मैं सत्तर साल से भी ज्यादा उम्र का हो गया हूं और जब मैं मात्र ग्यारह वर्ष का था, तभी मैंने संन्यास की दीक्षा ले ली थी, उसके बाद मेरे जीवन का अधिकांश हिस्सा संन्यास की मर्यादाओं का पालन करने और हिमालय स्थित उच्चकोटि के संन्यासियों के साथ समय बिताने के साथ-साथ ज्ञान प्राप्त करने का रहा है।

जब पूज्य गुरुदेव ने मुझे दीक्षा दी, तो इन्होंने सबसे पहले यह कहा था कि तुम्हें भारत की दुर्लभ और श्रेष्ठ सामग्रियों पर शोध करना है और यह ज्ञात करना है कि इन सामग्रियों पर किस प्रकार से साधना की जाय, किस विधि से अनुष्ठान सम्पन्न किये जांय और क्या इस प्रकार की विधियों से लाभ होता है या नहीं, इन सारे तथ्यों

की प्रामाणिक जानकारी ही तुम्हारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए और अपना पूरा जीवन इसी पर समर्पित करो।

गुरु की आज्ञा का पालन करना मेरे जीवन का प्रमुख लक्ष्य रहा है और गुरु दीक्षा के दिन से आज तक मैं उन दुर्लभ वस्तुओं पर प्रयोग करता रहा हूं और इन प्रयोगों में मुझे आश्चर्यजनक अनुभव तथा सफलताएं प्राप्त हुई हैं।

मैंने सियारसिंगी, हत्थाजोड़ी, एकाक्षी नारियल, श्वेतार्क गणपति और ऐसी सैंकड़ों हजारों देव दुर्लभ वस्तुओं के बारे में जानकारी प्राप्त की, इससे सम्बन्धित जितने भी प्रामाणिक ग्रन्थ थे उनको खंगाल डाला, जहां-जहां से भी इनसे सम्बन्धित साधनाएं उपलब्ध हो सकती थीं, उन साधनाओं को प्राप्त किया और ऐसी हजारों हस्तलिखित पुस्तकों को नोट किया, जिनमें इस प्रकार की सामग्री तथा सम्बन्धित अनुष्ठान विधि उपलब्ध थी।

यद्यपि भारतवर्ष में दक्षिणावर्ती शंख का विशेष महत्व जन साधारण में व्याप्त है, परन्तु मोती शंख अपने आपमें दुर्लभ और महत्वपूर्ण शंख है, इसकी चमक मोती के समान होने के कारण ही इसे मोती शंख कहा जाता है, यह एक गोल आकार का सुन्दर, सुरम्य शंख होता है जो कि अपने आप में कई विशेषताएं समेटे हुए है।

यह शंख छोटे बड़े कई साइजों में उपलब्ध होता है, यह प्रकृति का वरदान है जो मनुष्यों को सहज ही प्राप्त है।

मैंने दक्षिणावर्ती शंख पर ही कई अनुष्ठान किये हैं और उनमें मुझे आशातीत सफलताएं मिली हैं, परन्तु मोती शंख में यह विशेषता है कि इस पर प्रयोग करने से साधारण गृहस्थ को भी विशेष सफलता प्राप्त हो जाती है, यदि इस शंख की मैं विशेषताएं गिनाने बैठूं तो एक पूरा ग्रन्थ तैयार हो सकता है, इतने लम्बे समय के अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि यह शख लक्ष्मी का दूसरा स्वरूप ही है और प्रत्येक गृहस्थ को अपने घर में इस प्रकार का शंख रखना चाहिए, क्योंकि न मालूम कब इससे सम्बन्धित प्रयोग किसी साधु से प्राप्त हो जाय या किसी ग्रन्थ में पढ़ने को मिल जाय, अचानक और प्रयत्न करने पर इस प्रकार का शंख मिलना कठिन ही होता है।

मैं आगे के पृष्ठों में कुछ विशेष प्रयोग इस शंख पर दे रहा हूं मुझे विश्वास है कि ये प्रयोग गृहस्थ भाई-बहिनों के लिए विशेष रूप से उपयोगी और सार्थक होंगे।

आयुर्वेदिक प्रयोग

आयुर्वेद की दृष्टि से भी इस शंख का विशेष महत्व है, इस शख की संरचना ही कुछ इस प्रकार से है कि इसमें जल रखने पर उस जल में शंख के संयोग से कुछ विशेष प्रतिक्रिया हो जाने से वह जल विशेष प्रभावयुक्त हो जाता है—

१-रात्रि को इस शंख में जल भर कर रख दें तथा प्रातः काल इस जल को निकाल कर शरीर पर लगावें तो स्वतः ही चर्म रोग समाप्त हो जाते हैं।

२-इसी प्रकार इस शंख में बारह घण्टे जल भर कर वह जल यदि शरीर पर पाये जाने वाले सफेद दाग पर लगावें और ऐसा कुछ समय तक करें तो धीरे-धीरे ये सफेद दाग समाप्त हो जाते हैं और नैसर्गिक शरीर से मेल खाती हुई चमड़ी वहां प्राप्त हो जाती है।

३-रात्रि को इस शंख में जल भर कर रख दें तथा प्रातः काल इस जल में कुछ गुलाबजल मिला कर अपने बालों में लगावें तो धीरे-धीरे सफेद बाल काले हो जाते हैं और स्थाई रूप से काले रहते हैं, इसी प्रकार यह जल भौहों पर या दाढ़ी पर लगाने से वहां वहां के भी बाल काले हो जाते हैं।

४-यदि पेट में तकलीफ या आंतों में सूजन हो अथवा आंतों में किसी प्रकार का जख्म हो तो इस प्रकार बारह घण्टे तक इस शंख में रखे हुए जल का एक चम्मच नित्य पान करें तो धीरे-धीरे आंतों का जख्म मिट जाता है और पेट से सम्बन्धित रोग समाप्त हो जाते हैं।

५-लगभग बारह घण्टे तक रखा हुआ जल दूसरे सामान्य जल में मिलाकर यदि प्रातःकाल आंखों पर वह जल छिड़का जाय तो आंखें निरोग, स्वस्थ और तन्दुरुस्त हो जाती हैं, तथा यदि कुछ समय तक इसका नियमित अभ्यास करें तो आंखों पर लगा हुआ नजर का चश्मा उतर जाता है, और आंखें सामान्य स्वस्थ हो जाती हैं।

धार्मिक प्रयोग

धार्मिक दृष्टि से भी इस शंख को लक्ष्मी का अत्यन्त प्रिय आभूषण बताया है और एक प्रकार से लक्ष्मी का ही पति रूप माना गया है, अतः जिसके घर में पूजा स्थान में यह शंख रहता है उसके घर में निरन्तर लक्ष्मी प्रवास बना रहता है।

१-यदि प्रातःकाल स्नान करते समय इस शंख में थोड़ा सा जल लेकर वह बाल्टी मे भरे हुए पानी में मिला कर स्नान करें तो शरीर पुण्यवान और कान्तिमय होता है।

२-यदि इस प्रकार के शंख को कारखाने में स्थापित किया जाय तो स्वतः ही उसकी दरिद्रता समाप्त हो जाती है, और आर्थिक उन्नति होने लगती है, इस शंख को विशेष रूप से दारिद्रय निवारक कहा जाता है, और इसके रहने से उसके व्यापार में वृद्धि होती रहती है।

दैहिक प्रयोग

१-मेरा ऐसा अनुभव है कि यदि प्रातःकाल स्नान कर शरीर को पोंछ कर इस शंख को अपने चेहरे पर हलके हलके रगड़ें तो धीरे-धीरे चेहरे की झुरियां मिट जाती हैं और चेहरा कान्तिमय बन जाता है।

२-जिनको अपने चेहरे की सुन्दरता को यथावत बनाये रखने की इच्छा हो या जो अपने चेहरे को कान्तियुक्त बनाये रखना चाहता हो उसे इस प्रकार का प्रयोग अवश्य ही करते रहना चाहिए।

३-यदि इस शंख को पूरे शरीर पर हलके हलके फेरा जाय और कुछ दिनों तक ऐसा प्रयोग किया जाय तो अवश्य ही पूरा शरीर मोती की तरह स्वस्थ, सुन्दर एवं लावण्यमय बन जाता है।

४-कभी-कभी आंखों के नीचे काले-काले से दाग बन जाते हैं, जिससे चेहरे की सुन्दरता समाप्त हो जाती है, यदि इस शंख को नित्य प्रातःकाल उठकर आंखों के नीचे धीरे-धीरे फेरा जाय और इस प्रकार कुछ दिनों तक करें तो अवश्य ही ये दाग समाप्त हो जाते हैं, ऐसा मेरा अनुभव है।

अनुष्ठान

इस शंख पर कई प्रकार के अनुष्ठान सम्पन्न किये जाते हैं पर मेरा मूलतः अनुभव है कि लक्ष्मी प्राप्ति से सबंधित तथा वशीकरण से सम्बन्धित अनुष्ठान इस पर पूर्ण सफल और प्रभावकारी होते हैं मैं अपने दो अनुभूत प्रयोग नीचे स्पष्ट कर रहा हूं—

१-जीवन में सफलता प्राप्ति का प्रयोग

यदि घर में कलह हो या पति-पत्नी में मतभेद हो या पत्नी चाहती हो कि उसका पति उसके नियन्त्रण में रहे या कोई व्यक्ति किसी अन्य को अपने वश में करना चाहता हो या किसी शत्रु को अपने अधीन करना चाहता हो तो ऐसे सभी कार्यों में नीचे लिखा प्रयोग उपयोगी हो सकता है।

यह प्रयोग किसी भी रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है, रविवार के दिन प्रातःकाल उठ कर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस शंख को रख दें और इस पर कुंकुम आदि लगा दें, इसके बाद एक घृत का दीपक इसके सामने रख कर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की एक माला फेरें। इस प्रकार तीस दिनों तक नित्य नियम पूर्वक करें तो निश्चय ही वह अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लेता है, इस प्रकार के प्रयोग मे नित्य मात्र दस-पन्द्रह मिनट लगते हैं और ऐसा प्रयोग करने पर व्यक्ति मनोवांछित सफलता प्राप्त कर लेता है।

मन्त्र

॥ ॐ क्रीं अमुकं मे वशमानय स्वाहा ॥

यह मन्त्र अपने आप में विशेष शक्ति समेटे हुए है, इसकी विधि यह है कि मोती शंख अपने सामने रख दें

और चावल के साबुत दाने अपने सामने किसी पात्र में रख दें इस बात का ध्यान रखें कि चावल के दाने खण्डित न हों।

इसके बाद उपरोक्त मन्त्र पढ़ कर एक दाना इस शंख के मुंह में डाल दें, इस प्रकार नित्य १०८ दाने शंख के मुंह में १०८ बार मन्त्र पढ़ कर डाल दें।

मन्त्र में जहां "अमुक" लिखा हुआ है, वहां उस पुरुष या स्त्री का नाम उच्चारण करें जिसे वश में करना है, जब माला पूरी हो जाय, तब वह शंख वहां से उठा कर सुरक्षित स्थान पर रख दें, इस बात का ध्यान रखें कि शंख में डाले हुए चावल के दाने गिरें नहीं।

दूसरे दिन भी इस प्रकार १०८ बार मन्त्र पढ़ कर चावल के दाने इसमें डालें, इस प्रकार जब ३० दिन तक प्रयोग कर लें तो वे चावल के दाने किसी सफेद कपड़े में बांधकर अपने सन्दूक या किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें, ऐसा करने पर वह पुरुष या स्त्री प्रयोग करने वाले के वश में रहेगी और वह जैसा चाहता है, उसी प्रकार से कार्य सम्पन्न होगा।

२-लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग

यह शंख लक्ष्मी प्राप्ति, आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि आदि में भी विशेष रूप से सहायक है कर्जा उतारने में तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्व पूर्ण एवं प्रभावयुक्त है।

जो व्यक्ति इस प्रकार का प्रयोग चाहता है या अपने जीवन में पूर्ण आर्थिक उन्नति एवं व्यापार वृद्धि चाहता है, उसे यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

प्रयोग

किसी बुधवार को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस शंख को रख दें और उस पर केसर से स्वस्तिक चिन्ह बना दें, इसके बाद निम्न मन्त्र जप करें, मन्त्र जप में "स्फटिक माला" का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

मन्त्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं दारिद्रय विनाशिन्ये
धनधान्य समृद्धि देहि देहि नमः ॥

इस मन्त्रोच्चारण के साथ एक-एक चावल इस शंख के मुंह में डालते रहें, इस बात का ध्यान रखें कि चावल टूटे हुए न हों, इस प्रकार नित्य एक माला फेरें, यह प्रयोग भी ३० दिन का है, जो अपने आपमें अचूक और प्रभावयुक्त है।

पहले दिन की माला समाप्त होने के बाद उसमें चावल पड़े रहने दें और दूसरे दिन भी उसी प्रकार मन्त्र जप करते हुए उसमें एक-एक मन्त्र के साथ एक-एक चावल के दाने डालते रहें।

तीस दिन पर यह प्रयोग समाप्त होने के बाद चावलों सहित इस शंख को सफेद कपड़े में बांध कर अपने घर में पूजा स्थान में रख दें या कारखाने फैक्ट्री या व्यापारिक स्थल पर स्थापित कर दें, यह शंख साधक के पास जब तक रहेगा, तब तक उसके जीवन में आर्थिक अभाव नहीं होगा, तथा निरन्तर आर्थिक व्यापारिक उन्नति होती रहेगी, यह भी स्पष्ट है कि ऐसा प्रयोग करने पर शीघ्र ही व्यक्ति कर्जे से मुक्ति पा लेता है, और सभी दृष्टियों से उन्नति करता रहता है।

दीपावली के दिन भी इस शंख का पूजन किया जा सकता है और जिस प्रकार लक्ष्मी की पूजा होती है उसी प्रकार इसका पूजन किया जाना चाहिए।

वस्तुतः यह शंख अत्यधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ एवं प्रभावयुक्त है तथा ऐसे बिरले ही सौभाग्यशाली होंगे जिनके घर में इस प्रकार का दुर्लभ महत्वपूर्ण शंख पाया जाता होगा, पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस प्रकार का शंख तभी सफलता देने वाला हो सकता है जब वह प्राण संजीवनी क्रिया से सिक्त मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

वस्तुतः यह शंख प्रत्येक साधु संन्यासी और गृहस्थ के लिए उपयोगी है और मैंने इस पर कई प्रयोग सम्पन्न किये हैं, आगे फिर कभी इस शंख पर किये गये प्रयोगों का विवरण देने का प्रयत्न करूंगा। ●

चेटक तन्त्र

यह शरीर अनन्त क्षमताओं का केन्द्र है, शरीर में पूरे ब्रह्माण्ड के चक्र हैं विभिन्न शक्ति तथा देवताओं का निवास है, बस बुद्धि के संयोग से तथा साधना की तपस्या से अपने पांच-छः फुट के शरीर से मनुष्य असम्भव कार्य कर सकता है।

सम्मोहन, वशीकरण, वाक् सिद्धि, दूरदर्शन दूर-श्रवण ये सब क्षमताएं साधक तन्त्र के एक विशेष विधान **चेटक तन्त्र** के माध्यम से कर सकता है।

चेटक तन्त्र में जैसा विधान है, उसी के अनुसार साधना सम्पन्न करनी पड़ती है, चेटक तन्त्र की सभी साधनाएं संध्या काल में सूर्यास्त के पश्चात् ही सम्पन्न की जाती हैं। आगे साधकों हेतु चेटक तन्त्र विशेष रूप से स्पष्ट किये जा रहे हैं, प्रथम है **लिंग चेटक** और दूसरा है **भूतेश्वर चेटक**। ये दोनों साधनाएं साधक स्वयं बिना भय के पूर्ण विधि विधान सहित सम्पन्न करें और जब तक सफलता नहीं मिले तब तक करते ही रहें।

१- लिंग चेटक प्रयोग

श्रावण मास में यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, चेटक तन्त्र के अन्तर्गत यह साधना वाक् सिद्धि साधना है तथा एक लाख मन्त्र जप से ही साधक को सिद्धि प्राप्त हो जाती है, जिससे वह जो बात कहता है, वह बात पूर्णतः खरी उतरती है अथवा साधक जो भी आज्ञा देता है वह व्यक्ति उसकी आज्ञा का पालन करता ही है। इस प्रकार यह साधना वाक् सिद्धि के साथ-साथ वशीकरण और सम्मोहन की भी साधना है।

श्रावण मास में अर्थात् तारीख १५-७-९२ से १५-८-९२ के बीच आने वाले किसी भी सोमवार को प्रारम्भ कर इसे सम्पन्न करना चाहिए। इस साधना हेतु मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **लिंग चेटक** तथा **ग्यारह तांत्रोक्त फल** आवश्यक है। साधक सोमवार के दिन प्रातः शुभ मुहूर्त में तालाब से मिट्टी लेकर आएं और उससे सुन्दर शिवलिंग का निर्माण करें। इस शिवलिंग को सायंकाल सूर्यास्त के पश्चात् मन्दिर में अथवा अपने घर के पूजा स्थान के एकान्त में भगवान शिव के चित्र के आगे स्थापित करें। इस लिंग के सामने मन्त्र सिद्ध लिंग चेटक स्थापित करें। दोनों ही लिंगों की गन्ध, पुष्प से पूजन करें। मन्त्र सिद्ध लिंग चेटक को एक थाली में स्थापित कर उस पर ॐ नमः शिवाय मन्त्र का उच्चारण करते हुए दुग्ध अर्पण करें। अब अपने सामने ग्यारह तांत्रोक्त फल स्थापित कर प्रत्येक के आगे 'ह्रीं' बीज मन्त्र लिखें तथा मिट्टी के बनाये हुए स्थापित लिंग के जड़ भाग अर्थात् उद्गम स्थल पर अपना बांयां हाथ रख कर एक लाख मन्त्र का कुल जप प्रारम्भ करें—

लिंग चेटक मन्त्र

ॐ नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि मे वाचां सिद्धि बिलानां पार्वतीपते ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॥

अब यह साधक पर निर्भर करता है कि वह एक लाख मन्त्र जप कितने दिनों में पूरा करता है, निश्चित संख्या में ही प्रतिदिन मन्त्र जप करना चाहिए तथा जब दस हजार मन्त्र पूर्ण हो जाय तो एक तांत्रोक्त फल श्मशान में फेंक कर आ जांय, इस प्रकार प्रत्येक दस हजार मन्त्रों पर एक-एक तांत्रोक्त फल श्मशान में अर्पित करना है।

साधना की पूर्णता के पश्चात् साधक मिट्टी के बने लिंग को चन्दन अर्पित कर किसी नदी, सरोवर मे बहा

दें तथा मन्त्र सिद्ध लिंग चेटक को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

इस अनुष्ठान से साधक को अपूर्व वाक् सिद्धि प्राप्त होती है, इसमें संदेह करने वाला नरकगामी होता है।

२- भूतेश्वर चेटक प्रयोग

भूत-प्रेत इत्यादि शक्तियां चेटक तन्त्र द्वारा ही सिद्ध की जा सकती हैं, भूतेश्वर चेटक तन्त्र द्वारा भूत इत्यादि को अपने वश में कर उनसे इच्छानुसार कार्य कराया जा सकता है, इस साधना में साधक स्वामी बन कर तथा वीर मुद्रा में बैठ कर साधना करता है और भूत वश में होने पर इसका सेवक बन कर कार्य करता है।

इस तांत्रोक्त विधान में सामग्री भी कुछ विशेष प्रकार की है, इसमें प्रथम तो सबसे आवश्यक **भूत दर्शन सिद्धि कंकण** है, इस साधना में जो मुद्रा बनाई जाती है, उसमें दोनों उंगलियों को जोड़ कर मध्यमा उंगली फैला कर सुई के आधार में धारण करें तथा अंगूठे को सीधा खड़ा रखा जाता है यह मुद्रा भूतेश्वर मुद्रा कहलाती है।

इस साधना को एक लिंग मन्दिर में अर्थात् भगवान शिव के मन्दिर में किये जाने का विधान है, क्योंकि शिव मन्दिर में भूत-प्रेत तीव्र होकर साधक को कोई हानि नहीं पहुंचा सकते।

संध्या के पश्चात् रात्रि के प्रथम प्रहर अकेले बैठ कर अपने सामने एक लाल वस्त्र बिछा कर मध्य में **भूत दर्शन सिद्धि कंकण** स्थापित करें, इसके सामने काजल से सात बिन्दियां लगावें। अब एक विशेष प्रकार के लोबान धूप का प्रयोग किया जाता है, इस लोबान में रक्त, मांस, गुग्गुल, लवण का प्रयोग कर धूप को पूरे मन्त्र साधना के दौरान जलते रहना आवश्यक है।

यह साधना केवल तीन दिन की साधना है और प्रतिदिन एक हजार आठ मन्त्र जप आवश्यक है।

मन्त्र

॥ ॐ हूय: आ: भूतेश्वर: आगच्छागच्छ स्वाहा ॥

यह आवश्यक है कि साधक इस मन्त्र को याद कर लें और धूप की ओर देखते हुए मन्त्र जप करते रहें।

भूत डामर तन्त्र महाग्रन्थ में लिखा है कि इस साधना में साधक को प्रथम दिन भूत स्वप्न में दिखाई देता है और उसका स्वरूप बड़ा ही विकराल होता है।

दूसरे दिन साधक को जप के दौरान दिखाई देता है और साधक इससे भयभीत न हों और पूरा एक हजार आठ मन्त्र जप अवश्य ही सम्पन्न करें। कई बार तो भूत सामने ही आकर बैठ जाता है।

तीसरे दिन भूत अपने पूरे रूप में आकर स्थित हो जाता है और साधक से पूछता है कि **'मैं क्या करूं'** इसके उत्तर में साधक को कहना चाहिए कि तुम मेरे सेवक बनो और जब भी मैं बुलाऊं तुम्हें उपस्थित होना ही है। इस समय यह ध्यान रखें कि आपको मन्त्र जप बीच में छोड़ना नहीं है. एक आठ जप तो करना ही है।

इसके पश्चात् भूत को जो भी आज्ञा दी जाती है वह पूर्ण करता ही है, साधक 'भूत सिद्धि कंकण धारण कर जब भी मन्त्र जप करता है तो भूत तत्काल उपस्थित होता है और वह साधक को किसी न किसी न किसी रूप में उपहार अवश्य देता रहता है।

शास्त्रोक्त कथन है कि एक बार सिद्ध किये हुए **भूत दर्शन सिद्धि कंकण** को रत्न जड़ित स्वर्ण आभूषण से भी अधिक संभाल कर रखना चाहिए तथा किसी को भी मांगने पर न दें और न ही खेल-तमाशे के लिए किसी अन्य के सामने इसका प्रयोग करें। जब भी आह्वान करना हो, रात्रि समय एकान्त में ही यह मन्त्र आह्वान करें।

भूत सिद्धि साधना कठिन साधना नहीं लेकिन साधक का संकल्प अवश्य ही दृढ़ होना चाहिए तथा पूर्ण आत्म विश्वास के साथ यह साधना सम्पन्न करें। ●

दुर्गा सिद्ध सम्पुट मन्त्र

दुर्गासप्तशती तांत्रोक्त, मांत्रोक्त ग्रन्थों में अत्यन्त श्रेष्ठ व प्रभावपूर्ण पाठ है, जिसके पाठ मात्र से ही समस्त सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। 'दुर्गा सप्तशती' धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाली है, जो व्यक्ति जिस भाव और कामना से श्रद्धा एवं विधि के साथ सप्तशती का पाठ करता है उसे उसी भावना और कामना के अनुसार निश्चय ही फल सिद्धि होती है, इस बात का अनुभव अगणित स्त्रियों-पुरुषों को प्रत्यक्ष हो चुका है।

दुर्गा सप्तशती में से कुछ मन्त्रों का उल्लेख यहां किया जा रहा है, जो विविध कामनाओं से युक्त हैं. इनका प्रयोग दो प्रकार से होता है. पहला दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक के साथ सम्पुट लगा कर तथा दूसरा सीधे ही सम्बन्धित मन्त्र की नित्य पांच मालाएं फेर कर।

मुझे विश्वास है कि साधक गण इनका लाभ उठाएंगे—

१-सामूहिक कल्याण के लिए

देव्या यथा ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥

२-विश्व के अशुभ व भय के विनाश हेतु

यस्याः प्रभावमतुलं भगवानन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमल बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्यामित करोतु ॥

३-विश्व की रक्षा के लिए

या श्रीः स्वयं स्वीकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥

४-विश्व के अभ्युदय के लिए

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥

५-विश्वव्यापी विपत्तियों के नाश हेतु

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

६-विपत्ति नाश के लिए

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

७-विपत्ति नाश और शुभ की प्राप्ति हेतु

करोति सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।

८-पाप नाश के लिए

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥

९-रोग नाश के लिए

रोगानशेपानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥

१०-आरोग्य और सौभाग्य प्राप्ति हेतु

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

११-सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति हेतु

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ।।

१२-बाधा शान्ति के लिए

सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ।।

१३-सर्वविध अभ्युदय के लिए

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ।।

१४-दारिद्रयदुःखादि नाश के लिए

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्रयदुःखहारिणी कात्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्र चिता ।।

१५-रक्षा पाने के लिए

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च ।।

१६- समस्त विद्याओं और समस्त स्त्रियों में मातृभाव की प्राप्ति के लिए

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः ।।

१७-शक्ति प्राप्ति के लिए

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ।।

१८-सब प्रकार के कल्याण के लिए

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।

१९- प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए

प्रणातानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणी ।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ।।

२०-विविध उपद्रवों से बचने के लिए

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यस्य ।
दावानलो यत्र च विघ्न मध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ।।

२१-बाधामुक्त होकर धन पुत्रादि प्राप्ति हेतु

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनंधान्यसुतान्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ।।

२२-भुक्ति मुक्ति प्राप्त करने के लिए

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमं श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।

२३-स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति के लिए

सर्वभूता यदा देवि सर्वमुक्ति प्रदायिनी ।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ।।

२४-स्वप्न में सिद्धि असिद्धि जानने के लिए

दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके ।
मम सिद्धिमसिद्धि वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ।।

एक अनूठी योजना

परम पूज्य गुरुदेव अपने प्रवचनों में अपने शिष्यों को अनोखी बातें कहते रहते हैं, शिष्य उन बातों को सम्पूर्ण रूप से अपनाने के बजाय जो बातें उनके अनुकूल पड़ती है उस बात को तो अपना लेते हैं और जो बात उनके अनुकूल नहीं पड़ती, उसको त्याग देते हैं, अथवा गुरु आश्रम में तो उसे मान लेते हैं अपने गृहस्थ के क्रियाकलाप में भूल जाते हैं। क्या यह बात उचित है ?

कुण्डलिनी महायोग में केवल एक ही बात सबसे अधिक महत्वपूर्ण है और वह है, **'गुरु कृपा ही केवलम्'** और **'गुरुराज्ञा ही केवलम्'** । जब शिष्य यह सोच कर कार्य करे कि सर्व सिद्धि का मूल गुरु प्रसन्नता है, तभी वह शिष्य पूर्णत्व प्राप्त कर सकता है, उसे साधनाओं में सिद्धि प्राप्त हो सकती है। यदि गुरु चरणों में पूर्ण भाव है, विश्वास है तो और कहीं भटकने की आवश्यकता ही नहीं।

दैवे तीर्थे द्विजे मन्त्रे दैवज्ञे भेषजे गुरौ। यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ।।

अर्थात् देव में, तीर्थ में, ब्राह्मणों में, चैतन्य मन्त्रों में, देवी पुरुषों में, औषधि और श्री गुरुदेव में जिस प्रकार की भावना होती है और जितनी मात्रा में होती है उसी प्रकार की उसी मात्रा में ही सिद्धि प्राप्त होती है।

आज जब पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि तुममें से हर एक शिष्य समर्थ है, अपनी पूरी शक्ति से कार्य करना है, शक्ति भीतर छिपी है उसे दबाओ मत, यदि तुम साधना करते हो, गुरु मन्त्र का जप करते हो तो उसे संसार में अधिक से अधिक लोगों के सामने प्रकट करो और वास्तव में ऐसा ही होना चाहिए, शिष्य को कूपमण्डूक की तरह नहीं जीना चाहिए, उसे तो खुले समुद्र में विचरण करने वाले जलचर की भांति रहना चहिए, उसके पास सीमाओं का कोई बन्धन नहीं होना चाहिए।

गुरु प्रसाद का साकार रूप : 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान'

आज शिष्यों के लिए इससे अधिक बढ़ कर कोई सुन्दर उपहार नहीं है पूज्य गुरुदेव की वाणी से अलंकृत 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' पत्रिका के माध्यम से हजारों-लाखों शिष्य एक दूसरे से जुड़े हैं,

गुरुदेव चाहे कहीं रहें पत्रिका के माध्यम से शिष्य अपने आपको गुरुदेव के निकट समझता है और वास्तव में यह सत्य ही है, जिस भी घर में पूज्य गुरुदेव की यह वाणी पत्रिका पहुंचती है, वहां पूज्य गुरुदेव का वास होता है। उस घर में ज्ञान की सुगन्धित हवा का प्रवाह होता है, जो शिष्य के मन की, तन की पीड़ाओं का हरण कर लेती है।

गुरु धाम में, गुरु आश्रम में समय-समय पर होने वाले आयोजनों में शिष्य संकल्प लेते हैं और यह प्रसन्नता का विषय है कि आज तक जिसने भी जो संकल्प लिया उस संकल्प को पूरा किया, गुरु आज्ञा की पूर्ति में किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी। यह तो शिष्य की गुरु भक्ति है और गुरुदेव का शिष्य के प्रति अनुराग है।

अब कुछ और विशेष करना ही है

यदि सही रूप में कहा जाय कि गुरु सेवा में धन की आवश्यकता नहीं है तो यह गलत नहीं होगा। साधना के बल पर बड़े से बड़ा कार्य सम्पन्न किया जा सकता है। और हर शिष्य यह कार्य सम्पन्न कर सकता है, आज गुरु वचनों को इस श्रेष्ठ साहित्य **"मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान"** के प्रचार हेतु एक विशेष योजना बनाई है और इस योजना के प्रारूप को जब पूज्य गुरुदेव के सामने प्रस्तुत किया और उनसे स्वीकृति लेकर आपके सामने सब कुछ प्रस्तुत करते हुए अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

योजना का प्रारूप

पत्रिका के प्रारम्भ से ही यह निर्णय लिया गया था कि केवल वार्षिक सदस्य अथवा आजीवन सदस्य को ही पत्रिका भेजी जायेगी, पत्रिका को किसी स्टाल पर सामान्य बिक्री हेतु नहीं रखा जायेगा। यह योजना श्रेष्ठ थी और इसके परिणाम स्वरूप ही आज **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** में समर्पित शिष्य ही एक जुट होकर कार्य कर रहे हैं, जिनके विचार और उद्देश्य एक हैं।

जब-जब हमने पत्रिका के प्रचार-प्रसार की बात कही तो शिष्यों द्वारा अनेक प्रकार की क्रिया-प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। शिष्यों का कहना था कि उनके स्वयं के पास प्रतिमाह केवल एक पत्रिका उनकी स्वयं की आती है और जब वे पत्रिका के बारे में अन्य व्यक्तियों से चर्चा परिचर्चा करते हैं तो दूसरे लोग उनसे पत्रिका अध्ययन के लिए मांगते हैं लेकिन इसे देना संभव नहीं हो पाता। और जब तक दूसरा व्यक्ति स्वयं एकान्त भाव में पूर्ण गम्भीरता से अध्ययन नहीं करता तब तक उसे इसकी महानता का ज्ञान नहीं हो सकता। अतः यदि कुछ अतिरिक्त प्रतियां प्राप्त हों तो यह कार्य सहज हो सकता है। किसी भी नये व्यक्ति से पूरे वर्ष का चन्दा अग्रिम रूप से लेकर कार्यालय भेजना सहज नहीं है, क्योंकि हर नया व्यक्ति पहले शर्त द्वारा जब तक अपने आपको संतुष्ट नहीं कर देता तब तक उसकी श्रेष्ठ भावना का विकास नहीं हो सकता।

पत्रिकाएं मंगवाइये—धनराशि अभी मत भेजिये

यदि आप समर्पित शिष्य हैं, गुरु सेवा में कुछ कार्य करना चाहते हैं, पत्रिका का प्रचार-प्रसार करने में आपकी रुचि है, तो एक संकल्प लेकर इस योजना में भाग लें।

पत्रिका का वार्षिक शुल्क १२०)रु० है, इस हिसाब से प्रत्येक अंक का मूल्य १०)रु० हो जाता है। कार्यालय द्वारा आपको २५ पत्रिकाएं एक साथ रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा भेजी जाएंगी, आप इन २५ पत्रिकाओं को प्राप्त कर एक-एक अंक अपने मित्रों, स्वजनों, धर्म प्रेमी बन्धुओं को १०)रु० प्रति अंक के हिसाब से दे दें। १०)रु० आज के जमाने में हर कोई खर्च कर सकता है। और आप इस प्रकार २५०)रु० एकत्र कर सकते हैं, उसमें से अपने खर्चे के ५०)रु० निकाल कर कार्यालय को केवल २००)रु० मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज दें। जैसे ही आपकी यह धनराशि प्राप्त होगी आपको अगले महीने के २५ अंक रजिस्टर्ठ डाक द्वारा भेज दिये जाएंगे।

यह ध्यान रहे कि यह योजना आपकी सुविधा के लिए विशेष रूप से प्रारम्भ की गई है और जो संकल्प ले, उसे पूरा निभाएं। गुरु प्रवचनों के प्रचार-प्रसार का, सेवा का इससे अधिक सुन्दर कार्य और क्या हो सकता है।

इस योजना के सम्बन्ध में और कोई आपके सुझाव हों तो हमें लिख भेजें। नीचे दिये गये प्रपत्र को भर कर भेज दें।

प्रपत्र

गुरु सेवा योजना

मैं पूज्य गुरुदेव का शिष्य हूं अब मैं मन, वचन, कर्म से पूज्य गुरुदेव से जुड़ा हूं, इस योजना में भाग लेकर गुरु सेवा का यह कार्य करना चाहता हूं, और संकल्प लेता हूं कि इस कार्य को अपनी पूर्ण श्रद्धा, भक्ति के साथ सम्पन्न करूंगा, पूज्य गुरुदेव की अक्षुण्य कृपा बनी रहे।

आप मुझे लौटती डाक से ही .... (मास) .... की २५ पत्रिकाएं रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा भेज दें। पार्सल प्राप्ति के २५ दिन के भीतर मैं २००)रु० मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजने का संकल्प लेता हूं।

पत्रिका सदस्यता संख्या ....

मेरा पूरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

हस्ताक्षर

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
श्री वांछा कल्प लता प्रयोग	१३	श्री महात्रिपुर सुन्दरी चित्र, महागणपति यन्त्र, श्रीवांछा कल्पलता महायन्त्र, क्षिप्र भैरव एवं भैरवी चक्र, आनन्द भैरव एवं भैरवी चक्र, चार अमृत रुद्राक्ष—पैकेट—	३५१)रु०
भैरव साधना	१७	भैरव यन्त्र	२०५)रु०
		भैरव माला	१२०)रु०
सावर साधनाएं	२१	—	—
१-वशीकरण प्रयोग	२२	पांच हकीक पत्थर	५०)रु०
		सियारसिंगी	८०)रु०
२-व्यापार वर्धक प्रयोग	२२	तीन गोमती चक्र	६०)रु०
३-रोग निवारण प्रयोग	२२	चिरमी के तीन दाने	३०)रु०
४-कार्य सिद्धि प्रयोग	२२	बिल्ली की नाल	८०)रु०
५-आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग	२३	एक मधुरूपेण एकमुखी रुद्राक्ष	६०)रु०
६-अप्सरा प्रयोग	२४	वीर बहूटी	८०)रु०
		अप्सरा माला	२४०)रु०
७-विद्वेषण प्रयोग	२४	पांच हकीक नग	५०)रु०
८-हाजरात प्रयोग	२४	सिद्धि फल	६०)रु०
		हकीक माला	११०)रु०
पञ्चांगुली साधना	२७	ताम्र पत्र अंकित पञ्चांगुली यन्त्र	१५०)रु०
		पञ्चांगुली देवी चित्र	२५)रु०
मोती शंख साधना	२६	—	—
जीवन में सफलता प्राप्ति प्रयोग	३१	लक्ष्मी मोती शंख	२२१)रु०
		स्फटिक माला	१२०)रु०
चेटक तन्त्र	३३	—	—
१-लिंग चेटक प्रयोग	३३	लिंग चेटक	१२०)रु०
		ग्यारह तांत्रोक्त फल	१२१)रु०
२-भूतेश्वर चेटक प्रयोग	३४	भूत दर्शन सिद्धि कंकण	१८०)रु०
भगवान सिद्धेश्वर प्रयोग	कवर पेज	सिद्धेश्वर ज्योतिर्लिंग	१८०)रु०
		रुद्राक्ष माला	३००)रु०

प्रयोग विधि

श्रावण का प्रारम्भ १५ जुलाई को हो रहा है, १५ जुलाई को परिवार का मुखिया, साधक या घर का कोई भी सदस्य स्नान कर शुद्ध, स्वच्छ वस्त्र धारण कर किसी पात्र में केसर से ॐ नमः शिवाय लिख दें और उस पर भगवान 'सिद्धेश्वर' की स्थापना कर दें। सिद्धेश्वर एक विशेष प्रकार का ज्योतिर्लिंग है जिसे घर में स्थापित करना ही जीवन की पूर्णता है। विशिष्ट मन्त्रों से सिद्ध ऐसे **सिद्धेश्वर ज्योतिर्लिंग** को पात्र में स्थापित कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, केसर, कुंकुम, गुलाल आदि चढ़ा कर यदि संभव हो तो बिल्व पत्र भगवान सिद्धेश्वर पर चढ़ाएं, इसके बाद हाथ में जल लेकर उसमें थोड़ा सा कच्चा दूध मिलाकर स्वयं या पति-पत्नी दोनों धीरे-धीरे उस सिद्धेश्वर शिवलिंग पर ॐ नमः शिवाय का उच्चारण करते हुए जल चढ़ावें। धीरे-धीरे उस पात्र में इतना जल चढ़ा देना चाहिए, कि भगवान सिद्धेश्वर का शिवलिंग उस जल में डूब जाय, उस पूरे दिन यह ज्योतिर्लिंग उस जल में डूबा रहे।

इसके बाद सामने दीपक, अगरबत्ती लगावें, और निम्न विशिष्ट गोपनीय मन्त्र की पांच माला मन्त्र जप सम्पन्न करें—

सिद्धेश्वर मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं ऐं हर गौर्य रुद्राय अनंग रूपाय सिद्धि प्रदाय सिद्धेश्वराय नमः ॥

इस मन्त्र को पुरुष या स्त्री कोई भी जप सकता है, **रुद्राक्ष की माला** से ही इस मन्त्र का जप होना चाहिए, इसके बाद भगवान शिव की आरती करें और प्रसाद चढ़ावें, इस प्रसाद को पड़ोस के बालकों में बांट दें।

दूसरे दिन उस जल का पान थोड़ा-थोड़ा घर के सभी सदस्य करें जिससे उनके शरीर स्थित रोगों की निवृत्ति हो सके और बाकी जल को घर में छिड़क दें, इस प्रकार नित्य पूरे तीस दिन करें, इसका समापन १३ अगस्त को करें।

साधक सोमवार के दिन भगवान शिव को ११ पुष्प या ११ बिल्व पत्र चढ़ावें और ११ माला मन्त्र जप करें। इस श्रावण मास में निम्न तारीखों को सोमवार हैं—

२० तथा २७ जुलाई, ३ तथा १० अगस्त को सोमवार है, इनमें २७ जुलाई एवं १० अगस्त को सोमवारी प्रदोष है। १६ जुलाई को सूर्य की कर्क संक्रान्ति है।

११ छोटे-छोटे बालकों को भोजन करा दें और सिद्धेश्वर शिवलिंग को पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

यह इस वर्ष का श्रेष्ठतम और अद्वितीय प्रयोग है, जो सौभाग्य से प्राप्त होता है, प्रत्येक साधक को अपने घर में सिद्धेश्वर की स्थापना करनी ही चाहिए और इस प्रयोग को स्वयं या घर का कोई भी सदस्य सम्पन्न करे, आप स्वयं इस प्रयोग का चमत्कार और प्रभाव हाथों हाथ अनुभव करेंगे। ●

रजि० नं० : ३५३०५/८१

पोस्टल एल०आर०जे० : ३६६७/८६-८०

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

(गुरु पूजन एवं साधना शिविर)

दिनांक १२, १३, १४ जुलाई ९२ को

बम्बई में

सिद्धाश्रम साधक परिवार की केन्द्रीय समिति के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है।

जिसमें, प्रत्येक शिष्य एवं साधक को बम्बई पहुंच कर भाग लेना अनिवार्य है

शिष्य पूरे वर्ष गुरु के पास न जाय तो कोई अन्तर नहीं पड़ता, लेकिन गुरु पूर्णिमा के अवसर पर उसे गुरु के सम्मुख बैठ कर साक्षात् गुरु पूजन अवश्य ही करना चाहिए।

शिविर शुल्क— आपकी सुविधा के लिए बहुत ही कम— मात्र ३३०)रु० कर दिया गया है।

: शिविर स्थल :

भूरा भाई आरोग्य भवन (मयूर टाकीज के सामने)
शान्ति लाल मोदी रोड, कन्दिवली (वेस्ट) बम्बई

: सम्पर्क सूत्र :

श्री योगेन्द्र निर्मोही (फोन : ६४४३०५९)
श्री प्रताप शंकर पंड्या (फोन : ८२२५०३६)
श्री गणेश वटाणी (फोन : ६०५७११०)
श्रीमती सरला पंड्या (फोन : ६४९१९३३)
श्री रणजीत चौबे (फोन : ५६४०३४८)
श्री जसवंत भाई डुमसिया (फोन : ४५२४४४)